" दीप हैं जलते रहेंगे, हम प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

प्रेरणा भारती

प्रेरणा भारती NEWS NETWORK

www.preranabharati.com Email: preranabharati@gmail.com

हरिदर्शन HARIDARSHAN

हमारे यहाँ धार्मिक पुस्तक के साथ पूजा-पाठ, हवन-पूजन की सामग्री उचित मूल्य पर प्राप्त करें

मेहरपुर, शिलचर, असम-788015
मो.नं. 9435213512,

Postal Registration No.RN-SC-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 147 वर्ष -11 अधिक ज्येष्ठ कृ.चतुर्थी 2082 बृहस्पतिवार (4 जून 2026) मूल्य-5 रुपये, पृष्ठ-6, preranabharati@gmail.com

कर्नाटक के नए मुख्यमंत्री बने डीके शिवकुमार

जबलपुर.(एजें) ३ जून : कर्नाटक की राजनीति में बुधवार ३ जून को एक अहम अध्याय जुड.गया, जब कांग्रेस नेता डीके शिवकुमार ने राज्य के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की. राजधानी बेंगलुरु में आयोजित भव्य समारोह में उन्होंने हाथ में संविधान की कॉपी लेकर पद और गोपनीयता की शपथ ली.इस दौरान कार्यक्रम स्थल पर कांग्रेस नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भारी मौजूदगी देखने को मिली. शिवकुमार के साथ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जी. परमेश्वर ने उपमुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी संभाली. राज्यपाल ने दोनों नेताओं को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई. शपथ ग्रहण समारोह में कांग्रेस के कई दिग्गज नेता मंच पर मौजूद रहे.नई सरकार के गठन के साथ मंत्रिपरिषद का भी विस्तार किया गया. मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के अलावा १२ अन्य नेताओं को मंत्री पद की शपथ दिलाई जा रही है. इन नए चेहरों में पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के पुत्र डॉ. यतींद्र सिद्धारमैया का नाम भी शामिल है. इससे पहले सिद्धारमैया ने २८ मई को मुख्यमंत्री ⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

दिल्ली में असम के विकास को मिली नई गति: आईआईएम गुवाहाटी पर आगे बढ़ी पहल

राष्ट्रपति मुर्मु से मिले मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा

विशेष प्रतिनिधि नई दिल्ली, ३ जून। असम को शिक्षा, आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने राजधानी दिल्ली में महत्वपूर्ण बैठकों का दौर जारी रखा। इसी क्रम में उन्होंने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से प्रस्तावित आईआईएम गुवाहाटी की स्थापना को लेकर चर्चा की तथा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात कर राज्य के विकास की दिशा में मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किया।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ हुई बैठक में आईआईएम गुवाहाटी परिसर की रूपरेखा को अंतिम रूप देने पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि असम को पूर्वी भारत का प्रमुख शिक्षा केंद्र बनाने के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है और देश के सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों को राज्य में लाने की दिशा में काम कर रही है। उन्होंने शिक्षा अवसंरचना को मजबूत बनाने में केंद्रीय मंत्री के सहयोग की सराहना करते हुए विश्वास जताया कि आईआईएम गुवाहाटी की स्थापना से प्रबंधन शिक्षा, अनुसंधान और कौशल विकास को नई गति मिलेगी।इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने बुधवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से शिष्टाचार भेंट कर उन्हें असम की तीव्र आर्थिक प्रगति और भविष्य की विकास योजनाओं से अवगत कराया। मुख्यमंत्री के रूप में लगातार दूसरी बार कार्यभार संभालने के बाद राष्ट्रपति से उनकी यह पहली ⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

तीन दिनों तक दिल्ली में असम के मुख्यमंत्री २० से अधिक बैठकों में हुए शामिल : मार्घेरिटा

गुवाहाटी, ०३ जून (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने अपने तीन दिवसीय नई दिल्ली दौरे के दौरान केंद्र सरकार के शीर्ष नेताओं के साथ २० से अधिक महत्वपूर्ण बैठकों में भाग लिया। इन बैठकों में प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, विदेश मंत्री तथा डोनर मंत्री सहित कई वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री शामिल रहे।केंद्रीय मंत्री पवित्र मार्घेरिटा ने बुधवार को बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. सरमा ने असम के समग्र विकास को गति देने के उद्देश्य से विभिन्न मंत्रालयों के साथ विस्तृत चर्चा की। बैठकों में राज्य में चल रही विकास परियोजनाओं की प्रगति तथा भविष्य में शुरू की जाने वाली परियोजनाओं पर विशेष रूप से विचार-विमर्श किया गया।उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री लगातार केंद्र सरकार के साथ समन्वय स्थापित कर असम के लिए अधिक से अधिक विकासात्मक सहयोग सुनिश्चित करने के प्रयास में जुटे हुए हैं। इस दौरान बुनियादी ढांचे, संपर्क व्यवस्था, निवेश तथा अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों से जुड़े विषयों पर भी चर्चा हुई।पवित्र मार्घेरिटा के अनुसार, इन बैठकों से राज्य और केंद्र के बीच सहयोग और मजबूत होगा तथा असम में विभिन्न विकास परियोजनाओं के शीघ्र क्रियान्वयन का मार्ग प्रशस्त होगा।

दो साल बाद स्वर्ग के देवता भी गुवाहाटी को देखकर ठहर जाएंगे : प्रद्युत बरदलै

गुवाहाटी, ०३ जून, (हि.स.)। गुवाहाटी को एक हरित और आकर्षक महानगर के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से विधायक प्रद्युत बरदलै ने कहा है कि आगामी दो वर्षों में शहर की सुंदरता ऐसी होगी कि ङ्कस्वर्ग के देवता भी गुवाहाटी को देखकर ठहर जाएंगे।विधायक ने बुधवार को मीडिया से बातचीत करते हुए गुवाहाटी के सभी चार विधानसभा क्षेत्रों में एक-एक लाख एजार और कचनार के पौधे लगाने की महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस

व्यापक वृक्षारोपण अभियान के माध्यम से शहर के पर्यावरणीय संतुलन को मजबूत करने के साथ-साथ इसकी प्राकृतिक सुंदरता को भी नई पहचान दी जाएगी।बरदलै ने बताया कि गुवाहाटी को ङ्कपर्पल सिटीङ्क के रूप में विकसित करने की दिशा में यह विशेष पहल की जा रही है। उनका मानना है कि बडे.पैमाने पर लगाए जाने वाले फूलदार वृक्ष शहर को एक विशिष्ट और आकर्षक स्वरूप प्रदान करेंगे।उन्होंने नागरिकों से इस अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयासों से ही गुवाहाटी को स्वच्छ, हरित और सुंदर शहर के रूप में स्थापित किया जा सकेगा।

गुवाहाटी से लापता चार छात्राओं को पुलिस ने हावडा से किया बरामद

गुवाहाटी, ०३ जून (हि.स.)। गुवाहाटी से लापता हुई चार नाबालिग छात्राओं को बशिष्ठ पुलिस ने सकुशल बरामद कर बडी सफलता हासिल की है। सभी छात्राओं को पश्चिम बंगाल के हावडा से सुरक्षित रेस्क्यू किया गया।जानकारी के अनुसार, कक्षा छह और सात में पढने वाली ११-१२ वर्ष आयु की चार छात्राएं सोमवार को स्कूल जाते समय लापता हो गई थीं। घटना के बाद परिजनों में चिंता का माहौल बन गया था और पुलिस ने तत्काल खोजबीन शुरू की।बशिष्ठ पुलिस की त्वरित कार्रवाई और समन्वित प्रयासों के चलते छात्राओं का पता लगाकर उन्हें हावडा से सुरक्षित बरामद कर लिया गया। इसके बाद सभी छात्राओं को उनके परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।पुलिस मामले की जांच कर रही है और यह पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि छात्राएं किन परिस्थितियों में वहां पहुंचीं तथा घटना में किसी अन्य व्यक्ति की भूमिका थी या नहीं।

नशे के खिलाफ फूटा लोगों का गुस्सा, कथित ड्रग्स तस्कर के घर में तोडफ़ोड़

नगांव (असम), ०३ जून (हि.स.)। असम के नगांव जिले के हेरापति-तनपारा क्षेत्र में बुधवार को नशे के बढते कारोबार के खिलाफ स्थानीय लोगों का आक्रोश फूट पडा। बडी संख्या में ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए एक कथित ड्रग्स तस्कर के घर में तोडफ़ोड.की, जिससे इलाके में तनाव का माहौल बन गया।प्रदर्शनकारियों ने शमसुल हक नामक व्यक्ति पर क्षेत्र में मादक पदार्थों के अवैध कारोबार का संचालन करने का आरोप लगाया। आक्रोशित भीड.ने उसके आवास को निशाना बनाते हुए व्यापक क्षति पहुंचाई। स्थानीय लोगों का आरोप है कि उन्होंने कई बार पुलिस को क्षेत्र में नशे के कारोबार और इससे जुडे.लोगों के खिलाफ शिकायतें दी थीं, लेकिन प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई।ग्रामीणों का कहना है कि नशे की समस्या के कारण युवाओं का भविष्य प्रभावित हो रहा है और प्रशासन की कथित निष्क्रियता के चलते लोगों में असंतोष लगातार बढ. रहा था। इसी नाराजगी के बीच लोगों ने विरोध प्रदर्शन को उग्र रूप दे दिया।उल्लेखनीय है कि नगांव जिले में हाल के महीनों में नशे के खिलाफ जनाक्रोश की कई घटनाएं सामने आई हैं। इससे पहले मोखखुली क्षेत्र में भी लोगों ने कथित नशा कारोबारियों और नशेडयिों के घरों में तोडफ़ोड.की थी।

वहीं, डाकोवाल क्षेत्र में एक युवक की संदिग्ध ड्रग्स ओवरडोज से मौत के बाद भी स्थानीय लोगों ने कथित नशा अड्डों को ध्वस्त कर दिया था।घटना के बाद प्रशासन ने हेरापति-तनपारा क्षेत्र में निगरानी बढा दी है ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति को रोका जा सके। हालांकि, अंतिम समाचार मिलने तक पुलिस की ओर से इस मामले में किसी की गिरफ्तारी या आधिकारिक बयान की पुष्टि नहीं की गई थी।

बराक नदी में असम राइफल्स की बडी कार्रवाई, ८० लीटर अवैध देसी शराब जब्त

जिरीबाम (मणिपुर), ३ जून। असम राइफल्स ने मणिपुर के जिरीबाम जिले के बोरोबेकरा क्षेत्र में एक सफल अभियान चलाते हुए ८० लीटर अवैध देसी शराब बरामद की है। यह कार्रवाई नियमित एरिया डोमिनेशन पेट्रोलिंग के दौरान की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, असम राइफल्स के जवानों ने बराक नदी में बोरोबेकरा की ओर बढ.रही एक संदिग्ध नाव को देखा। जवानों द्वारा चुनौती दिए जाने पर नाव में सवार व्यक्ति अंधेरे का फायदा उठाकर भागने का प्रयास करने लगे। हालांकि, सैनिकों ने त्वरित कार्रवाई करते हुए नाव का पीछा किया और एक संदिग्ध तस्कर को पकड.लिया। गिरफ्तार व्यक्ति बोरोबेकरा उपमंडल के अंकहासुओ क्षेत्र का निवासी बताया गया है।नाव की तलाशी के दौरान ८० लीटर देसी शराब बरामद की गई। जब्त शराब तथा गिरफ्तार तस्कर को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए मणिपुर पुलिस के हवाले कर दिया गया है। मामले की जांच जारी है।प्राथमिक जानकारी के अनुसार, बरामद शराब को क्षेत्र में सक्रिय उग्रवादी संगठनों (यूजी समूहों) तक पहुंचाने के उद्देश्य से ले जाया जा रहा था। हालांकि, इस संबंध में अंतिम पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी।असम राइफल्स ने कहा है कि वह क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है तथा अवैध गतिविधियों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा।

असम-मेघालय सीमा पर भूमि विवाद सुलझा,शांति का ऐतिहासिक समझौता

पंकज चौहान, खेरनी, जून ३ : असम-मेघालय अंतरराज्यीय सीमा पर शांति, सद्भाव और सौहार्द बहाल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। मंगलवार को पश्चिम कार्बी आंग्लोंग जिले में असम पुलिस के अस्थायी कैंप में आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में दोनों राज्यों के बीच एक आपसी समझौता हुआ। बैठक में कार्बी आंग्लोंग स्वायत्त परिषद **(काक)** और मेघालय सरकार के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक का मुख्य उद्देश्य असम के तापत गांव और मेघालय के लापांगाप गांव के

निवासियों के लंबे समय से चले आ रहे मुद्दों को सुलझाना था। बैठक की अध्यक्षता डॉ. तुलीराम रोंगहांग, कार्बी आंग्लोंग स्वायत्त परिषद के मुख्य कार्यकारी सदस्य एवं विधायक तथा स्निआब्हालांग धार, मेघालय के उपमुख्यमंत्री ने की। बैठक में लोकसभा सांसद अमरसिंग टिस्सो, कई विधायकों, कार्यकारी सदस्यों, स्वायत्त परिषद सदस्यों तथा दोनों राज्यों के वरिष्ठ प्रशासनिक, पुलिस और राजनीतिक अधिकारियों ने हिस्सा लिया। लापांगाप गांव (मेघालय) के निवासी तापत क्षेत्र के मैदानी और निचली पहाडी भागों में अपनी पारंपरिक कृषि भूमि पर खेती जारी रख सकेंगे, जिसमें वे पहले से काबी निवासियों से खरीदी गई भूमि भी शामिल है। वहीं तापत गांव (असम) के काबी किसान आस-पास की पहाडी और ढलान वाले क्षेत्रों में केला, अनानास और अदरक जैसी मौसमी फसलों की खेती बिना किसी बाधा के कर सकेंगे।दोनों पक्षों ने सीमा क्षेत्र में शांति, सद्भाव और कानून व्यवस्था बनाए रखने की प्रतिबद्धता जताई। समझौते पर दोनों गांवों के प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षर किए गए, जिसमें डॉ. तुलीराम रोंगहांग और उपमुख्यमंत्री स्निआब्हालांग धार गवाह के रूप में शामिल हुए।बैठक के बाद डॉ. तुलीराम रोंगहांग ने संतोष व्यक्त करते हुए कहा, ङ्कयह समझौता दोनों समुदायों की लंबे समय से चली आ रही कृषि प्रथाओं को मान्यता देता है साथ ही स्थानीय निवासियों के अधिकारों की रक्षा भी करता है। चर्चा सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई और दोनों पक्ष भविष्य में टकराव से बचने की साझा इच्छा रखते हैं। मेघालय के उपमुख्यमंत्री स्निआब्हालांग धार ने समझौते का ⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

जोरहाट में सनसनीखेज डकैती, अकेली वृद्धा को हथियार दिखाकर लूटा

जोरहाट (असम), ०३ जून (हि.स.)। असम के जोरहाट जिले के ज्योतिपुर कलाखोवा क्षेत्र में हुई एक सनसनीखेज डकैती की घटना ने इलाके में चिंता का माहौल पैदा कर दिया है। बीती रात डकैतों ने अकेली रह रही वृद्ध महिला रूबी पात्र को हथियार दिखाकर उनके घर में लूटपाट की। जानकारी के अनुसार, घटना के समय रूबी पात्र घर में अकेली थीं। इसी दौरान कुछ बदमाश घर में घुस आए और उन्हें हथियारों से धमकाया। आरोप है कि डकैतों ने महिला की गर्दन पर धारदार हथियार रखकर उन्हें भयभीत किया और घर में रखी नकदी तथा सोने के आभूषण लूटकर फरार हो गए।घटना के बाद क्षेत्र में दहशत का माहौल है। विशेष रूप से अकेले रहने वाले बुजुर्गों की सुरक्षा को लेकर स्थानीय लोगों ने गहरी चिंता व्यक्त की है।सूचना मिलते ही पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस अपराधियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने के प्रयास में जुटी हुई है। स्थानीय लोगों ने क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की मांग की है ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

विधायक अमीनुल के भतीजों पर युवक से मारपीट और धार्मिक टिप्पणी का आरोप, पुलिस जांच में जुटी

रानू दत्त शिलचर, ३ जून। कछार जिले के कनकपुर प्रथम खंड क्षेत्र में एक युवक के साथ कथित मारपीट, धमकी और धार्मिक आधार पर अपमानजनक टिप्पणी किए जाने का मामला सामने आया है। पीडति ने इस संबंध में शिलचर सदर थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है, जिसके आधार पर पुलिस जांच शुरू कर दी गई है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, सोमवार शाम करीब ४ बजे नूर खातून प्राथमिक विद्यालय के सामने सोनाई रोड निवासी आकाश सिंह की कार को रोककर कनकपुर निवासी दो भाइयों ं अकीब उज्जामान लस्कर (साकिल) और मालिक उज्जामान जमान लस्कर ं तथा उनके कुछ सहयोगियों ने कथित रूप से मारपीट की।आकाश सिंह का आरोप है कि हमले में उनके एक कान में गंभीर चोट लगी है। उन्होंने यह भी दावा किया कि आरोपियों ने उनकी कार की चाबी छीनने का प्रयास किया तथा उन्हें जान से मारने की धमकी दी। शिकायत के अनुसार, आरोपियों ने स्वयं को विधायक अमीनुल हक लस्कर का भतीजा बताते हुए रास्ते से गुजरने के बदले कथित रूप से ङ्कगुंडा टैक्सङ्क की मांग की।पीडति ने आरोप लगाया है कि घटना के दौरान उनके धर्म को लेकर भी आपत्तिजनक और अपमानजनक टिप्पणियां की गई। किसी तरह वहां से निकलकर उन्होंने शिलचर सदर थाना पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई।इस बीच, स्थानीय बजरंग दल नेता रूपक दास ने घटना की निंदा करते हुए इसे सांप्रदायिक मानसिकता से प्रेरित बताया और दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने पीडित आकाश सिंह की सुरक्षा सुनिश्चित करने की भी मांग उठाई है।शिलचर

सदर थाना पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि शिकायत में लगाए गए सभी आरोपों की निष्पक्ष एवं विस्तृत जांच की जाएगी तथा जांच में जो तथ्य सामने आएंगे, उनके आधार पर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी। (नोट: समाचार में उल्लिखित आरोप शिकायतकर्ता के बयान पर आधारित हैं। पुलिस जांच पूरी होने के बाद ही तथ्यों की आधिकारिक पुष्टि हो सकेगी।)

शिलचर में युवा शक्ति क्लब की सराहनीय पहल,ग्रामीणों की सुविधा के लिए बनाया बांस का पुल

विशेष प्रतिनिधि शिलचर, ३ जून: सामाजिक दायित्व निभाने और जनसेवा के उद्देश्य से कार्यरत युवा शक्ति क्लब पिछले तीन महीनों से विभिन्न समाजसेवी गतिविधियों को निरंतर संचालित कर रहा है। इसी क्रम में बुधवार को क्लब ने एक और उल्लेखनीय पहल करते हुए स्थानीय लोगों की वर्षों पुरानी समस्या का समाधान किया।आश्रम रोड स्थित कीर्तन मैदान के समीप श्री श्री महाप्रभु लेन के अंतिम छोर पर नाले के पार लगभग १०० से १५० परिवार निवास करते हैं। लंबे समय से इस क्षेत्र के लोगों को आवागमन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड.रहा था। विशेषकर बारिश के दिनों में स्थिति और भी गंभीर हो जाती थी।स्थानीय निवासियों द्वारा समस्या से

अवगत कराए जाने पर युवा शक्ति क्लब के सदस्य मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। इसके बाद क्षेत्रवासियों की परेशानी दूर करने के लिए क्लब की पहल तथा सदस्यों के सहयोग से एक बांस का पुल निर्मित किया गया, जिससे लोगों को सुरक्षित और सुगम आवागमन की सुविधा मिल सकेगी।क्लब के पदाधिकारियों ने बताया कि समाज के जरूरतमंद लोगों की सहायता करना और जनहित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाना ही संगठन का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने सभी नागरिकों से सहयोग और आशीर्वाद की अपेक्षा करते हुए कहा कि भविष्य में भी क्लब समाज कल्याण के कार्यों को जारी रखेगा। युवा शक्ति क्लब का ध्येय वाक्य है ं 'मानव सेवा, समाज कल्याण।'

नाबालिग लड़की को पढ़ाई का लालच देकर घरेलू काम के लिए बहला-फुसलाकर काम पर रखा गया; मार्गेरिटा में FIR दर्ज

मार्गेरिटा (अर्णव शर्मा) ३ जून : असम के तिनसुकिया जिले में एक नाबालिग लडक़ी के शोषण और गलत व्यवहार का एक गंभीर मामला सामने आया है, जहां मार्गेरिटा टी एस्टेट की एक १६ साल की लडक़ी के माता-पिता ने एक स्थानीय निवासी पर उनकी बेटी को पढाई का झांसा देकर गुवाहाटी ले जाने और बाद में उससे घरेलू काम करवाने का आरोप लगाया है। पीडति के परिवार के अनुसार, आरोपी की पहचान शिव बंसल के रूप में हुई है, जो मार्गेरिटा बाजार का रहने वाला है और कथित तौर पर गुवाहाटी के एक प्राइवेट बैंक में काम करता है। उसने कई साल पहले नाबालिग लडक़ी को शहर में उसके माता-पिता को यह

भरोसा दिलाकर ले गया था कि वह उसकी पढाई और बेहतर भविष्य का इंतजाम करेगा। हालांकि, परिवार का आरोप है कि पढाई के मौके देने के बजाय, लडक़ी को शारीरिक और मानसिक रूप से परेशान किया गया ⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

!! नकारात्मक विचारों का आना तय है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उन्हे कितना महत्व देते हैं। !!

सम्पादकीय.....

छात्रों की भावनाओं से खिलवाड. करते कोचिंग संस्थान?

देश में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का बाजार लगातार विस्तार कर रहा है। मेडिकल, इंजीनियरिंग, सिविल सेवा और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के सपने दिखाकर कोचिंग संस्थान करोडों रुपये का कारोबार खडा कर चुके हैं। इसी संदर्भ में वरिष्ठ पत्रकार अंजना ओम कश्यप की हालिया टिप्पणी ने एक बार फिर शिक्षा के व्यावसायीकरण और कोचिंग संस्कृति पर बहस छेड.दी है। आज कोचिंग संस्थान केवल शिक्षा देने तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे एक बडे.उद्योग का रूप ले चुके हैं। आकर्षक विज्ञापन, टॉपर्स की तस्वीरें, चयन प्रतिशत के बडे-बडे.दावे और सफलता की गारंटी जैसे प्रचार विद्यार्थियों और अभिभावकों को प्रभावित करते हैं। लेकिन इन चमकदार दावों के पीछे की वास्तविकता अक्सर अलग होती है। हजारों छात्रों में से कुछ सफल छात्रों को सामने रखकर संस्थान अपनी ब्रांडिंग करते हैं, जबकि असफल छात्रों की संख्या कहीं अधिक होती है।

सबसे गंभीर चिंता छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर है। प्रतियोगिता की दौड.में कई विद्यार्थी अत्यधिक दबाव, तनाव और अवसाद का सामना करते हैं। अनेक परिवार अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक खर्च कर बच्चों को कोचिंग दिलाते हैं। ऐसे में यदि अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता, तो छात्र स्वयं को असफल समझने लगते हैं। यह स्थिति केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक चिंता का विषय है। यह भी सच है कि सभी कोचिंग संस्थानों को एक ही तराजू में नहीं तौला जा सकता। अनेक संस्थान गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन देकर छात्रों के सपनों को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। समस्या तब पैदा होती है जब शिक्षा सेवा की जगह केवल व्यवसाय बन जाती है और छात्रों की आकांक्षाओं को लाभ कमाने का साधन समझ लिया जाता है।

सरकार और नियामक संस्थाओं को कोचिंग उद्योग के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाने चाहिए। भ्रामक विज्ञापनों, चयन प्रतिशत के गलत दावों और अत्यधिक शुल्क पर प्रभावी नियंत्रण आवश्यक है। साथ ही स्कूल और कॉलेज स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को मजबूत करना भी उतना ही जरूरी है, ताकि छात्रों की कोचिंग पर निर्भरता कम हो सके। अंततः शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास कराना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण करना है। यदि कोचिंग संस्थान छात्रों के सपनों को संवारने के बजाय उनकी भावनाओं और आशाओं का व्यापार करने लगें, तो यह शिक्षा व्यवस्था के लिए गंभीर चेतावनी होगी। समाज, अभिभावकों, सरकार और स्वयं कोचिंग संस्थानों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि विद्यार्थियों के भविष्य के साथ कोई खिलवाड.न हो।

वैश्विक शांति और करुणा के सुरों को मिला सर्वोच्च सम्मान

धर्मशाला (एजें) ३ जून : आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा को उनके एल्बम 'मेडिटेशन्स' के लिए मिला पहला ग्रैमी पुरस्कार, सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान ने धर्मशाला आवास पर जाकर सौंपा। धर्मशाला स्थित आधिकारिक आवास पर आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा को उनका पहला ग्रैमी पुरस्कार सौंपने पहुंचे संगीतकार। तस्वीर में बाएं से दाएं: अमान अली बंगश, उस्ताद अमजद अली खान, दलाई लामा, कबीर सहगल और अयान अली बंगश ग्रैमी ट्रॉफी और प्रमाण पत्र के साथ नजर आ रहे हैं। ऊश्ररळ डरार त्रीशा अुरीव २०२६ : हिमाचल प्रदेश की खूबसूरत वादियों में बसे धर्मशाला से आज एक ऐतिहासिक और वैश्विक स्तर पर गौरवपूर्ण तस्वीर सामने आई है। तिब्बती आध्यात्मिक गुरु, १४वें दलाई लामा को उनके आधिकारिक आवास पर आयोजित एक विशेष और गरिमामयी समारोह में उनकी पहली ग्रैमी ट्रॉफी औपचारिक रूप से सौंप दी गई। संगीत की दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित सम्मान को लेकर स्वयं ऑस्कर और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता की दहलीज पर पहुंचे थे विश्व प्रसिद्ध सरोद वादक उस्ताद अमलाद अली खान, उनके सुपुत्र अमान अली बंगश, अयान अली बंगश और जाने-माने संगीत निर्माता कबीर सहगल। यह पल न केवल कला और आध्यात्मिकता के मिलन का प्रतीक बना, बल्कि इसने वैश्विक पटल पर शांति और करुणा के भारतीय संदेश को एक बार फिर अमर कर दिया। झीरींरहझरश्र डळींश थहरीअर्ि चैनल से जुडें.सबसे तेज.और ताजा खबरें सीधे अपने व्हाट्सएप पर पाएं। अभी हमारे आधिकारिक झीरींरहझरश्र डळींश थहरीअर्ि उहरपपशश्र से जुडें। अभी जुडें.यह ऐतिहासिक सम्मान दलाई लामा के साल २०२५ में आए बहुचर्चित स्पोकन-वर्ड (बोलचाल) एल्बम 'मेडिटेशन्स: द रिफ्लेक्शंस ऑफ हिज होलीनेस द दलाई लामा' के लिए दिया गया है। इस एल्बम ने बीती १ फरवरी २०२६ को लॉस एंजिल्स में आयोजित ६८वें ग्रैमी अवाड्र्स में 'बेस्ट ऑडियोबुक, नरेशन एंड स्टोरीटेलिंग रिकॉर्डिंग' की श्रेणी में जीत हासिल की थी। उस समय अमेरिका में हुए मुख्य समारोह में दलाई लामा की अनुपस्थिति के कारण उनके साथी संगीतकार रूफस वेनराइट ने पुरस्कार स्वीकार किया था, लेकिन आज यह सुनहरी ट्रॉफी सीधे ९० वषीय आध्यात्मिक गुरु के हाथों में सुशोभित हुई। एल्बम की गहराई और उसकी बनावट किसी भी सामान्य संगीत प्रयास से कोसों आगे है। इसमें दलाई लामा के सात दशकों के सार्वजनिक जीवन के अनुभवों, लगभग १०० घंटों से अधिक के भाषणों और संवादों को संकलित कर १० विशेष ट्रैकों में पिरोया गया है। इस एल्बम की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें दलाई लामा के करुणा, पर्यावरण चेतना और वैश्विक शांति से जुडे.विचारों के पीछे उस्ताद अमजद अली खान और उनके बेटों के सरोद की मधुर प्रस्तुतियां बैकग्राउंड म्यूजिक के रूप में बहती हैं। एल्बम के 'वॉटर' नामक ट्रैक में वे तिब्बत में अपने बचपन से लेकर अब तक बदलते पर्यावरण पर चिंता व्यक्त करते हैं, वहीं 'पीस' ट्रैक में वे करुणा को मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य बताते हैं। प्रतिस्पर्धा के लिहाज से यह जीत बेहद असाधारण रही। ६८वें ग्रैमी पुरस्कारों की इस दौड.में दलाई लामा का मुकाबला दुनिया की कई दिग्गज हस्तियों से था। उन्होंने अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस केतनजी ब्राउन जैक्सन की संस्मरण पुस्तक 'लवली वन', मशहूर कॉमेडियन और पूर्व ग्रैमी होस्ट ट्रेवर नोह की 'इंटो द अनकट ग्रास' और मिली वानीली के फैब मोरवन जैसी वैश्विक शख्सियतों को पछाडक़र यह मुकाम हासिल किया। पुरस्कार सौंपने से पहले मीडिया से मुखातिब होते हुए सरोद उस्ताद अमजद अली खान ने बेहद भावुक स्वर में कहा कि यह परियोजना हमारे सरोद की गूंज और महामहिम के कालजयी विचारों का एक पवित्र संगम थी। उनके शब्दों ने दुनिया भर के करोडों दिलों को छुआ है और उन्हें यह ग्रैमी सौंपना हमारे परिवार के लिए परम सौभाग्य की बात है। वहीं, ट्रॉफी ग्रहण करते हुए महामहिम दलाई लामा ने अपने चिरपरिचित विनम्र अंदाज में इस सम्मान को किसी व्यक्तिगत उपलब्धि के बजाय वैश्विक जिम्मेदारी की स्वीकृति बताया। उन्होंने संदेश दिया कि आज के दौर में दुनिया की ८ अरब आबादी के कल्याण के लिए शांति, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय एकता की समझ ही एकमात्र रास्ता है। धर्मशाला के इस पावन कक्ष से निकली यह ग्रैमी ट्रॉफी मात्र एक पुरस्कार नहीं, बल्कि अशांत होती जा रही दुनिया के लिए करुणा की एक नई थेरेपी बनकर उभरी है।

क्या पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बन पायेगा ?

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास केवल समाचारों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह जनचेतना, सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक मूल्यों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संघर्ष की भी कहानी है। वर्ष १८२६ में प्रकाशित उदन्त मार्तण्ड से लेकर आज के डिजिटल युग तक पत्रकारिता ने लंबा सफर तय किया है। यह यात्रा अनेक चुनौतियों, संघर्षों, उपलब्धियों और जिम्मेदारियों से भरी रही है।

सौरभ वार्ष्णेय

आज की पत्रकारिता: संघर्ष, जिम्मेदारी और विश्वास की परीक्षा बन कर रह गई है। लोकतंत्र के चार प्रमुख स्तंभों में पत्रकारिता को केवल कहने भर को विशेष स्थान प्राप्त है। पत्रकारिता केवल समाचारों का संकलन और प्रसारण भर नहीं है, बल्कि यह समाज को जागरूक करने, सत्ता से प्रश्न पूछने और जनभावनाओं को अभिव्यक्ति देने का सशक्त माध्यम भी है। किंतु वर्तमान समय में पत्रकारिता अनेक चुनौतियों, दबावों और संघर्षों के दौर से गुजर रही है। ऐसे समय में पत्रकारिता की भूमिका, जिम्मेदारी और विश्वसनीयता पर गंभीर चिंतन आवश्यक हो गया है। अभी ३० मई पत्रकारिता दिवस बीता है लेकिन सत्ता की तरफ से सिर्फ रस्म अदायगी? क्या वाकई पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ संविधान के तहत बन पायेगा या हम पत्रकार बिरादरी सिर्फ गाहे गवाये ढोल पीटते रह जायेंगे? पत्रकारिता सिर्फ और सिर्फ कहने भर का चौथा स्तंभ रह जायेगा। यह एक ज्वलंत विषय है।

आज सूचना क्रांति का युग है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने समाचारों के प्रसार को अत्यंत तेज बना दिया है। जहां पहले एक समाचार को पाठकों तक पहुंचने में घंटों या दिनों का समय लगता था, वहीं अब कुछ ही सेकंड में खबरें दुनिया भर में पहुंच जाती हैं। लेकिन इस तेजी के साथ एक बडी चुनौती भी सामने आई है, सत्य और असत्य के बीच अंतर करने की चुनौती। फर्जी खबरें, आधी-अधूरी जानकारी और भ्रामक प्रचार पत्रकारिता की विश्वसनीयता को प्रभावित कर रहे हैं।

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य निष्पक्षता, सत्यता और जनहित की रक्षा करना है। लेकिन आज कई बार व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, टीआरपी की दौड.और राजनीतिक प्रभाव के कारण पत्रकारिता अपने मूल सिद्धांतों से भटकती दिखाई देती है। समाचारों की प्रस्तुति में सनसनीखेजता बढ. रही है, जबकि तथ्यों की गहराई और निष्पक्ष विश्लेषण को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पा रहा है। यह स्थिति लोकतंत्र और समाज दोनों के लिए चिंता का विषय है।

दूसरी ओर, जमीनी स्तर पर कार्य करने वाले पत्रकारों का संघर्ष भी कम नहीं है। अनेक पत्रकार सीमित संसाधनों में काम करते हुए जनसमस्याओं को उजागर करने का प्रयास करते हैं। कई बार उन्हें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दबावों का सामना करना पडता है। दूर-दराज के क्षेत्रों में कार्यरत संवाददाता जनता और प्रशासन के बीच सेतु का कार्य करते हैं, लेकिन उनके योगदान को हमेशा उचित सम्मान और सुरक्षा नहीं मिल पाती। डिजिटल युग ने पत्रकारिता को नए अवसर भी प्रदान किए हैं। स्वतंत्र पत्रकारिता, वैकल्पिक मीडिया और ऑनलाइन समाचार मंचों ने आम लोगों की आवाज को व्यापक मंच दिया है। अब कोई भी महत्वपूर्ण मुद्दा सोशल मीडिया के माध्यम से राष्ट्रीय बहस का विषय बन सकता है। हालांकि, इस स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी जुडी हुई है। बिना सत्यापन के सूचना साझा करना समाज में भ्रम और अविश्वास पैदा कर सकता है।

आज पत्रकारिता के सामने सबसे बडी परीक्षा जनता के विश्वास को बनाए रखने की है। पाठक और दर्शक केवल खबर नहीं, बल्कि विश्वसनीय खबर चाहते हैं। पत्रकारों और मीडिया संस्थानों को यह समझना होगा कि उनका सबसे बडा पूंजीगत निवेश जनता का विश्वास है। यदि यह विश्वास कमजोर होता है, तो पत्रकारिता का प्रभाव और महत्व दोनों प्रभावित होंगे।

आवश्यकता इस बात की है कि पत्रकारिता अपने मूल मूल्यों्सत्य, निष्पक्षता, पारदर्शिता और जनहित् को पुन: केंद्र में स्थापित करे। पत्रकारों को तथ्यपरक रिपोर्टिंग, नैतिक मानकों और सामाजिक जिम्मेदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही सरकारों और समाज को भी स्वतंत्र एवं निर्भीक पत्रकारिता के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।

पत्रकारिता केवल एक पेशा नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा को जीवंत रखने का माध्यम है। चुनौतियां चाहे कितनी भी बडी हों, यदि पत्रकारिता सत्य और जनहित के मार्ग पर अडिग रहती है, तो वह समाज का विश्वास जीतने में सफल होगी। आज की पत्रकारिता वास्तव में संघर्ष, जिम्मेदारी और विश्वास की परीक्षा के दौर से गुजर रही है, और यही परीक्षा उसके भविष्य की दिशा भी तय करेगी।

भारतीय पत्रकारिता की गौरवशाली यात्रा

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास केवल समाचारों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह जनचेतना, सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक मूल्यों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संघर्ष की भी कहानी है। वर्ष १८२६ में प्रकाशित उदन्त मार्तण्ड से लेकर आज के डिजिटल युग तक पत्रकारिता ने लंबा सफर तय किया है। यह यात्रा अनेक चुनौतियों, संघर्षों, उपलब्धियों और जिम्मेदारियों से भरी रही है।

३० मई १८२६ को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कोलकाता से प्रकाशित उदन्त मार्तण्ड हिंदी का पहला समाचार पत्र था। सीमित संसाधनों, आर्थिक कठिनाइयों और सरकारी उपेक्षा के बावजूद इस पत्र ने हिंदी पत्रकारिता की नींव रखी। यहीं से हिंदी भाषा में समाचारों और विचारों के प्रसार का एक नया युग प्रारंभ हुआ।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता ने देशभक्ति और जनजागरण का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। अनेक समाचार पत्रों और पत्रकारों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज उठाई। समाचार पत्र केवल सूचना का माध्यम नहीं रहे, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के सशक्त हथियार बन गए। उस दौर की पत्रकारिता का मूल उद्देश्य राष्ट्रहित और जनहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पत्रकारिता ने लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी भूमिका को और मजबूत किया। सत्ता की जवाबदेही सुनिश्चित करना, जनता की समस्याओं को उठाना और सामाजिक मुद्दों को सामने लाना इसकी प्रमुख जिम्मेदारियां बनीं। प्रिंट मीडिया के साथ-साथ रेडियो और टेलीविजन ने भी पत्रकारिता के दायरे को व्यापक बनाया।

इक्कीसवीं सदी में इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन ने पत्रकारिता का स्वरूप पूरी तरह बदल दिया। आज समाचार कुछ ही सेकंड में दुनिया के किसी भी कोने तक पहुंच जाता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सूचना के प्रसार को तेज और व्यापक बनाया है, लेकिन इसके साथ फेक न्यूज, भ्रामक सूचनाएं, टीआरपी की प्रतिस्पर्धा और विश्वसनीयता का संकट जैसी नई चुनौतियां भी सामने आई हैं। आज पत्रकारिता एक ऐसे मोड.पर खडी है जहां तकनीकी विकास और नैतिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखना सबसे बडी आवश्यकता है। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल खबर देना नहीं, बल्कि सत्य, निष्पक्षता और जनहित की रक्षा करना भी है। यदि पत्रकारिता अपनी मूल भावना से भटकती है, तो समाज और लोकतंत्र दोनों कमजोर पड.सकते हैं। विश्व प्रेस स्वतंत्रता और पत्रकारिता दिवस जैसे अवसर हमें याद दिलाते हैं कि पत्रकारिता का वास्तविक उद्देश्य सत्ता या किसी विशेष विचारधारा का समर्थन करना नहीं, बल्कि जनता की आवाज बनना है। उदन्त मार्तण्ड से शुरू हुई यह यात्रा आज डिजिटल मीडिया, वेब पोर्टल, मोबाइल पत्रकारिता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग तक पहुंच चुकी है, लेकिन इसकी आत्मा आज भी वही है्सत्य की खोज और समाज की सेवा। आवश्यकता इस बात की है कि पत्रकारिता आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए भी अपने मूल सिद्धांतों् निष्पक्षता, निर्भीकता, विश्वसनीयता और जनसरोकार्को बनाए रखे। यही उदन्त मार्तण्ड की विरासत है और यही भारतीय पत्रकारिता का भविष्य भी।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक है।

सोशल मीडिया ट्रेंड और एल्गोरिदम की भूमिका

डॉ. प्रियंका सौरभ

लोकतंत्र की सबसे बडी शक्ति जनमत होता है। यह जनमत किसी एक दिन या एक चुनाव के दौरान निर्मित नहीं होता, बल्कि समाज में निरंतर चलने वाले संवाद, बहस, विचार-विमर्श, सामाजिक अनुभवों, राजनीतिक चेतना और नागरिक भागीदारी की लंबी प्रक्रिया से आकार लेता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों का सूचित निर्णय, विभिन्न विचारों का आदान-प्रदान और असहमति के प्रति सम्मान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। लंबे समय तक देश में जनमत के निर्माण का आधार प्रत्यक्ष संवाद, जनसभाएं, सामाजिक संगठन, समाचार-पत्र, पुस्तकें, शिक्षण संस्थान और जन आंदोलन रहे। लेकिन डिजिटल क्रांति के बाद यह परिदृश्य तेजी से बदला है। आज सोशल मीडिया केवल संवाद का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि वह जनमत निर्माण की सबसे प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। ऐसे समय में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या अब जनमत नागरिकों के स्वतंत्र चिंतन से अधिक सोशल मीडिया ट्रेंड और एल्गोरिदम द्वारा निर्धारित होने लगा है?

भारत विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र है और साथ ही दुनिया के सबसे बडे. डिजिटल उपभोक्ता समूहों में से एक भी। करोडो लोग प्रतिदिन फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यू-ट्यूब, व्हाट्स ऐप और अन्य डिजिटल मंचों का उपयोग करते हैं। समाचारों से लेकर राजनीतिक विचारों तक, समाज के बडे.वर्ग की प्राथमिक जानकारी अब इन्हीं प्लेटफॉर्मो से प्राप्त होती है। यह परिवर्तन केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पहले जहां नागरिक किसी मुद्दे पर अखबार पढक़र, बहस सुनकर या स्थानीय स्तर पर चर्चा करके राय बनाते थे, वहीं अब राय निर्माण की प्रक्रिया काफी हद तक डिजिटल मंचों पर निर्भर हो गई है। इस प्रक्रिया में सोशल मीडिया एल्गोरिदम की भूमिका केंद्रीय हो गई है।

एल्गोरिदम ऐसे तकनीकी तंत्र हैं जो यह तय करते हैं कि किसी उपयोगकर्ता को कौन-सी सामग्री दिखाई जाएगी और कौन-सी नहीं। वे उपयोगकर्ता की पसंद, गतिविधियों, खोज इतिहास और ऑनलाइन व्यवहार का विश्लेषण करके सामग्री का चयन करते हैं। तकनीकी दृष्टि से उनका उद्देश्य उपयोगकर्ता को अधिक समय तक प्लेटफॉर्म पर बनाए रखना होता है, क्योंकि डिजिटल कंपनियों का आर्थिक मॉडल इसी पर आधारित है। लेकिन लोकतांत्रिक दृष्टि से यह प्रक्रिया कई गंभीर प्रश्न खडे.करती है। यदि नागरिकों को वही सामग्री दिखाई जाए जो उनकी पूर्व मान्यताओं से मेल खाती हो, तो क्या वे विविध विचारों से परिचित हो पाएंगे? यदि एल्गोरिदम यह तय करने लगें कि कौन सा मुद्दा महत्वपूर्ण है, तो क्या लोकतांत्रिक विमर्श स्वतंत्र रह पाएगा?

आज सोशल मीडिया पर ट्रेंड होना किसी विषय की लोकप्रियता का प्रमुख संकेतक माना जाता है। कोई हैशटैग लाखों बार साझा हो जाए तो वह राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन जाता है। कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि जो ट्रेंड कर रहा है वही जनभावना का प्रतिनिधित्व कर रहा है। किंतु यह आवश्यक नहीं कि ट्रेंड वास्तव में समाज की व्यापक राय का प्रतिबिंब हो। अनेक बार ट्रेंड संगठित डिजिटल अभियानों, राजनीतिक प्रचार, भुगतान आधारित प्रचार रणनीतियों या बॉट नेटवर्क द्वारा भी निर्मित किए जाते हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि डिजिटल दृश्यता और वास्तविक जनसमर्थन हमेशा समानार्थी नहीं होते।जमीनी स्तर की राजनीतिक भागीदारी और डिजिटल सक्रियता के बीच का अंतर भी इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण है। भारत का लोकतांत्रिक इतिहास प्रत्यक्ष जन सहभागिता के अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है। स्वतंत्रता आंदोलन में लोगों ने जेल यात्राएं कीं, सत्याग्रह किए और सामाजिक परिवर्तन के लिए व्यक्तिगत जोखिम उठाए। बाद के दशकों में भी अनेक आंदोलनों ने नागरिकों को प्रत्यक्ष रूप से संगठित किया। इन आंदोलनों में लोगों के बीच संवाद, विश्वास और सामूहिकता का निर्माण होता था। इसके विपरीत डिजिटल सक्रियता अकसर प्रतीकात्मक भागीदारी तक सीमित रह जाती है। किसी पोस्ट को साझा करना, किसी हैशटैग का समर्थन करना या प्रोफाइल फोटो बदलना आसान है, लेकिन यह हमेशा वास्तविक सामाजिक हस्तक्षेप में परिवर्तित नहीं होता। परिणामस्वरूप राजनीतिक भागीदारी का एक नया स्वरूप विकसित हुआ है जिसमें दृश्यता अधिक और प्रत्यक्ष सामाजिक प्रतिबद्धता अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है।

सोशल मीडिया एल्गोरिदम का एक महत्वपूर्ण प्रभाव तथाकथित 'इको चैंबर' और 'फिल्टर बबल' के रूप में सामने आता है। जब कोई व्यक्ति किसी विशेष प्रकार की सामग्री देखता या पसंद करता है, तो एल्गोरिदम उसे उसी प्रकार की और सामग्री दिखाने लगते हैं। धीरे-धीरे वह व्यक्ति ऐसे डिजिटल वातावरण में पहुंच जाता है

जहां उसे मुख्यतः वही विचार दिखाई देते हैं जिनसे वह पहले से सहमत होता है। इससे वैचारिक विविधता कम हो जाती है और विरोधी विचारों के प्रति असहिष्णुता बढऩे लगती है। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि नागरिक विभिन्न दृष्टिकोणों को सुनने और समझने के लिए तैयार हों। लेकिन यदि एल्गोरिदम नागरिकों को वैचारिक रूप से अलग-अलग खेमों में बांट दें, तो लोकतांत्रिक संवाद की गुणवत्ता प्रभावित होना स्वाभाविक है।

भारत में राजनीतिक ध्रुवीकरण की बढती प्रवृत्ति को भी इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। सोशल मीडिया पर विभिन्न राजनीतिक समूह अपने-अपने डिजिटल समुदायों में सक्रिय रहते हैं। इन समुदायों के भीतर साझा की जाने वाली सामग्री अक्सर एक विशेष दृष्टिकोण को पुष्ट करती है और विरोधी विचारों को संदेह, उपहास या शत्रुता की दृष्टि से प्रस्तुत करती है। इससे समाज में संवाद की जगह टकराव की प्रवृत्ति बढ.सकती है। लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक और आवश्यक है, लेकिन जब असहमति संवाद के बजाय वैमनस्य का रूप लेने लगे तो लोकतांत्रिक संस्कृति कमजोर पडऩे लगती है। फेक न्यूज और दुष्प्रचार का प्रश्न भी सोशल मीडिया एल्गोरिदम से गहराई से जुडा हुआ है। एल्गोरिदम उन सामग्रियों को अधिक बढावा देते हैं जिन पर लोग तेजी से प्रतिक्रिया देते हैं। अक्सर भावनात्मक और सनसनीखेज सामग्री तथ्यात्मक और संतुलित सामग्री की तुलना में अधिक तेजी से फैलती है। यही कारण है कि झूठी खबरें, आधे-अधूरे तथ्य, भ्रामक वीडियो और मनगढंत दावे सोशल मीडिया पर अत्यंत तेजी से वायरल हो जाते हैं। भारत में कई अवसरों पर फेक न्यूज ने सामाजिक तनाव, सांप्रदायिक विवाद और सार्वजनिक भ्रम की स्थिति उत्पन्न की है। चुनावी राजनीति में भी गलत सूचनाओं का उपयोग मतदाताओं की राय को प्रभावित करने के लिए किया जाता रहा है। जब नागरिकों के निर्णय तथ्यात्मक जानकारी के बजाय दुष्प्रचार पर आधारित होने लगें, तो लोकतंत्र की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पडऩा स्वाभाविक है।

सोशल मीडिया ने राजनीतिक संचार को भी पूरी तरह बदल दिया है। पहले राजनीतिक दलों को जनता तक पहुंचने के लिए रैलियों, सभाओं, पोस्टरों और पारंपरिक मीडिया का सहारा लेना पडता था। अब वे सीधे नागरिकों के मोबाइल फोन तक पहुंच सकते हैं। यह सुविधा लोकतंत्र के लिए सकारात्मक भी है क्योंकि इससे सूचना का प्रवाह तेज हुआ है। लेकिन इसके साथ ही माइक्रो-टार्गेटिंग जैसी नई रणनीतियां भी विकसित हुई हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं के व्यवहार से संबंधित विशाल मात्रा में डेटा एकत्र करते हैं। इस डेटा के आधार पर अलग-अलग समूहों को अलग-अलग राजनीतिक संदेश भेजे जा सकते हैं। इससे राजनीतिक प्रचार अधिक प्रभावी तो हो जाता है, लेकिन पारदर्शिता कम हो जाती है। नागरिकों को यह पता ही नहीं चलता कि उन्हें जो संदेश दिखाया जा रहा है, वही संदेश अन्य नागरिकों को भी दिखाई दे रहा है या नहीं। लोकतंत्र का आदर्श सार्वजनिक और खुला विमर्श है, जबकि माइक्रो-टार्गेटिंग राजनीतिक संवाद को खंडित और निजी बना सकती है।

हालांकि सोशल मीडिया और एल्गोरिदम के प्रभाव को केवल नकारात्मक दृष्टि से देखना उचित नहीं होगा। इन मंचों ने अनेक सकारात्मक अवसर भी प्रदान किए हैं। समाज के हाशिए पर स्थित समूहों, महिलाओं, युवाओं, ग्रामीण समुदायों और अल्पप्रतिनिधित्व वाले वर्गों को अपनी बात रखने का नया मंच मिला है। कई सामाजिक मुद्दे जो पहले मुख्यधारा मीडिया में पर्याप्त स्थान नहीं पाते थे, सोशल मीडिया के माध्यम से राष्ट्रीय बहस का विषय बने हैं। डिजिटल माध्यमों ने सूचना तक पहुंच को अधिक लोकतांत्रिक बनाया है और नागरिकों को सत्ता से सीधे संवाद करने का अवसर दिया है। कई जनहित अभियानों ने सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक समर्थन प्राप्त किया है। प्राकृतिक आपदाओं, सामाजिक आंदोलनों और जनजागरुकता अभियानों में डिजिटल प्लेटफॉर्म की सकारात्मक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब तकनीकी मंच स्वयं लोकतांत्रिक विमर्श के निर्णायक बनने लगते हैं। किसी लोकतंत्र में यह निर्णय नागरिकों और संस्थाओं का होना चाहिए कि कौन-से मुद्दे महत्वपूर्ण हैं, न कि किसी निजी कंपनी के एल्गोरिदम का। लेकिन व्यवहार में कई बार यही होता दिखाई देता है कि जो विषय एल्गोरिदमिक रूप से अधिक दृश्यता प्राप्त कर लेता है, वही सार्वजनिक बहस के केंद्र में आ जाता है। इससे उन महत्वपूर्ण मुद्दों की उपेक्षा हो सकती है जो डिजिटल रूप से आकर्षक नहीं हैं, लेकिन सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ग्रामीण संकट, श्रमिक अधिकार, शिक्षा की गुणवत्ता, सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्थानीय प्रशासन जैसे विषय अक्सर मनोरंजक या विवादास्पद सामग्री की भीड. में दब जाते हैं।

हमारे लोकतंत्र के सामने सबसे बडी चुनौती यह है कि वह डिजिटल तकनीक के लाभों को स्वीकार करते हुए उसके दुष्प्रभावों को कैसे नियंत्रित करे। इसके लिए केवल सरकारी नियमन पर्याप्त नहीं होगा। डिजिटल साक्षरता को बढावा देना आवश्यक है ताकि नागरिक सूचना का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकें। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में मीडिया साक्षरता तथा तथ्य-जांच संबंधी शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सोशल मीडिया कंपनियों को भी अपने एल्गोरिदम की पारदर्शिता और जवाबदेही बढानी होगी। राजनीतिक विज्ञापनों और डिजिटल प्रचार अभियानों के लिए स्पष्ट नियमों की आवश्यकता है ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की निष्पक्षता बनी रहे। स्वतंत्र मीडिया, नागरिक समाज और शैक्षणिक संस्थानों को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि लोकतंत्र केवल तकनीक से संचालित नहीं हो सकता। तकनीक लोकतंत्र का साधन हो सकती है, उसका विकल्प नहीं। सोशल मीडिया नागरिकों को जोड. सकता है, लेकिन वह वास्तविक सामाजिक संबंधों और जमीनी भागीदारी का स्थान नहीं ले सकता। किसी पोस्ट को साझा करना और किसी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना दो अलग-अलग बातें हैं। किसी हैशटैग को ट्रेंड कराना और समाज में स्थायी परिवर्तन लाना भी समान नहीं हैं। लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति अभी भी जागरूक नागरिकों, स्वतंत्र चिंतन, सार्वजनिक संवाद और सामूहिक भागीदारी में निहित है।जब ट्रेंड जनमत को प्रभावित करने लगें, तब नागरिकों की जिम्मेदारी और भी बढ. जाती है। उन्हें यह समझना होगा कि हर वायरल सामग्री सत्य नहीं होती, हर ट्रेंड जनभावना का प्रतिनिधित्व नहीं करता और हर डिजिटल बहस लोकतांत्रिक विमर्श नहीं होती। लोकतंत्र की रक्षा केवल संस्थाएं नहीं करतीं, बल्कि सचेत नागरिक भी करते हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि डिजिटल युग में नागरिक तकनीक का उपयोग करें, लेकिन उसके द्वारा नियंत्रित न हों। यदि हम ऐसा कर पाए, तो सोशल मीडिया लोकतंत्र को सशक्त बनाने का माध्यम बनेगा, अन्यथा यह खतरा बना रहेगा कि एक दिन जनमत नागरिकों की स्वतंत्र चेतना से नहीं, बल्कि एल्गोरिदम द्वारा निर्मित ट्रेंड से निर्धारित होने लगेगा। यही हमारे समय की सबसे बडी लोकतांत्रिक चुनौती है।

(लेखिका, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

कर्नाटक के नए मुख्यमंत्री बने डीके....

पद से इस्तीफा दे दिया था. उन्होंने मई २०२३ से लेकर मई २०२६ तक राज्य का नेतृत्व किया.मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री के अलावा जिन नेताओं ने शपथ ली है उसमें, के. एच मुनियप्पा, केजी जॉर्ज, एमबी पाटिल, रामलिंगा रेड्डी, सतीश जखोली, कृष्ण बायरेगौडा, प्रियांक खडग़े, यूटी खेदार, ईश्वर खांद्रे, यतीन्द सिद्धारमैया, बैराथी सुरेश और शरण प्रकाश पाटिल के नाम शामिल हैं.डीके शिवकुमार के शपथ ग्रहण से पहले एक भावुक तस्वीर सामने आई. शपथ ग्रहण के लिए लोक भवन जाने से पहले डीके शिवकुमार ने अपनी मां के पांव छूकर आशीर्वाद लिए. जिसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की जा रही है. डीके शिवकुमार तीन सालों तक कर्नाटक में उपमुख्यमंत्री के तौर पर काम कर रहे थे. अब उन्होंने सीएम पद की शपथ ले ली है.

दिल्ली में असम के विकास को मिली नई ....

मुलाकात थी। डॉ. सरमा ने राष्ट्रपति को राज्य की विकास यात्रा, निवेश आकर्षण, आधारभूत संरचना विस्तार और जनकल्याणकारी पहलों की जानकारी दी तथा आगे की विकास यात्रा के लिए उनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किया।मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति मुर्मु को साहस, दृढता और प्रेरणादायी नेतृत्व का प्रतीक बताते हुए कहा कि उनके विचार और सुझाव जनसेवा के मार्ग में निरंतर प्रेरणा प्रदान करते हैं।राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में इन बैठकों को असम के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एक ओर जहां आईआईएम गुवाहाटी की स्थापना राज्य को राष्ट्रीय शिक्षा मानचित्र पर नई पहचान दे सकती है, वहीं दूसरी ओर केंद्र के साथ बढता समन्वय असम के आर्थिक और सामाजिक विकास को और अधिक गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

असम-मेघालय सीमा पर भूमि विवाद सुलझा,....

स्वागत करते हुए कहा, ङ्यह समझौता तापत और लापांगाप के लोगों के बीच शांति और आपसी विश्वास को मजबूत करेगा। हमारा उद्देश्य सीमा क्षेत्र में शांतिपूर्ण कृषि गतिविधियां सुनिश्चित करना और स्थिरता बनाए रखना था। असम-मेघालय सीमा क्षेत्र में वर्षों से समय-समय पर तनाव और विवाद देखने को मिले हैं। मंगलवार का यह समझौता दोनों समुदायों को अपनी पारंपरिक खेती जारी रखने की अनुमति देते हुए एक व्यावहारिक और रचनात्मक कदम माना जा रहा है। बडे.सीमा संबंधी मुद्दों पर दोनों राज्य सरकारें उचित स्तर पर चर्चा जारी रखेंगी। दोनों पक्षों के अधिकारियों ने इस विकास को सीमा क्षेत्र में बढते सहयोग और स्थायी शांति की दिशा में एक सकारात्मक मील का पत्थर बताया है।

नाबालिग लडक़ी को पढाई का लालच देकर ....

और उससे घरेलू काम करवाया गया। यह मामला तब सामने आया जब लडक़ी की मां अपनी बेटी को वापस घर लाने की कोशिश में गुवाहाटी गई। परिवार ने आरोप लगाया है कि जब मां उस घर पहुंची जहां उसकी बेटी रह रही थी, तो आरोपी और उसकी पत्नी ने उसे धमकाया और डराया। कथित दुश्मनी के बावजूद, मां अपनी बेटी को लेकर मार्गेरिटा लौटने में कामयाब रही। वापस आने के बाद, मां ने ऑल आदिवासी स्टूडेंट एसोसिएशन ऑफ असम (AASAA), मार्गेरिटा रीजनल कमेटी के सदस्यों से संपर्क किया और पूरी घटना बताई। शिकायत मिलने पर, AASAA मार्गेरिटा रीजनल कमेटी के प्रेसिडेंट संजय बारला और सेक्रेटरी सेबेस्टियन तुरुवर के नेतृत्व में एक डेलीगेशन मार्गेरिटा टी एस्टेट की लेबर लाइन में पीडति परिवार से मिला और घटना के बारे में जानकारी इकट्ठा की। इसके बाद स्टूडेंट बॉडी ने मार्गेरिटा में आरोपी के परिवार वालों से मुलाकात की और आरोपों पर सफाई मांगी और पढाई में मदद की आड.में एक नाबालिग आदिवासी लडक़ी के कथित शोषण पर चिंता जताई। कथित घटना की निंदा करते हुए, AASAA नेताओं ने सवाल उठाया कि एक पढा-लिखा युवा प्रोफेशनल कैसे पढाई का वादा करके और फिर नाबालिग से घरेलू काम और कथित शोषण करवाकर एक कमजोर परिवार के भरोसे का गलत इस्तेमाल कर सकता है।संगठन ने मार्गेरिटा पुलिस स्टेशन में एक फॉर्मल FIR दर्ज कराई है, जिसमें पूरी जांच और जम़्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है। इस घटना से मार्गेरिटा इलाके के कई सामाजिक और कम्युनिटी संगठनों में बहुत चिंता फैल गई है, जिनमें से कई ने पीडति और उसके परिवार को सपोर्ट दिया है। लोकल ग्रुप्स ने नाबालिग लडक़ी के लिए तुरंत सुरक्षा और पुनर्वास के उपायों की मांग की है, और इस बात पर जोर दिया है कि बच्चों को शोषण से बचाया जाना चाहिए और उन्हें शिक्षा और सुरक्षित माहौल मिलना चाहिए।इस बीच, मार्गेरिटा पुलिस ने आरोपों की जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों ने कहा कि जांच के नतीजों के आधार पर सही कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह ध्यान देने वाली बात है कि आरोपों की अभी जांच चल रही है, और आरोपी का बयान अभी तक पब्लिक नहीं किया गया है।

सिंगला चाय बागान में नाचघर का भूमि-पूजन, विधायक डॉ. मिलन दास को सौंपे गए दो महत्वपूर्ण ज्ञापन

विशेष प्रतिनिधि हाइलाकांदी, ३ जून । बराक घाटी विकास विभाग की पहल एवं माननीय मंत्री श्री कौशिक राय के मार्गदर्शन में आयनाखाल ग्राम पंचायत के अंतर्गत सिंगला चाय बागान में नव-निर्मित नाचघर के भूमि-पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हाइलाकांदी के विधायक डॉ. मिलन दास मुख्य रूप से उपस्थित रहे।इस अवसर पर आयोजित जनसभा में विधायक डॉ. मिलन दास ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं क्षेत्रवासियों को संबोधित करते हुए राज्य सरकार द्वारा चाय बागान क्षेत्रों के विकास एवं जनकल्याण के लिए किए जा रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी दी। इसके उपरांत आयनाखाल नाचघर में स्थानीय निवासियों के साथ एक सौहार्दपूर्ण विचार-विमर्श बैठक आयोजित की गई, जिसमें क्षेत्र के समग्र विकास, शिक्षा, रोजगार तथा बुनियादी सुविधाओं से जुडे. विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई।कार्यक्रम के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता राजू केवट ने चाय बागान समुदाय की ओर से विधायक डॉ. मिलन दास को दो महत्वपूर्ण ज्ञापन सौंपे। पहले ज्ञापन में चाय बागान समुदाय के शिक्षित युवक-युवतियों के लिए आरक्षण कोटा बढाने तथा इस विषय को असम विधानसभा में उठाने की मांग की गई। ज्ञापन में कहा गया कि चाय बागान समुदाय के शिक्षित युवाओं को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पा रहे हैं, इसलिए उनके लिए आरक्षण व्यवस्था को और सुदृढ.किए जाने की आवश्यकता है। दूसरे ज्ञापन में सिंगला चाय बागान एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में एलपीजी गैस एजेंसी स्थापित करने की मांग उठाई गई। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि वर्तमान में गैस सिलेंडर प्राप्त करने के लिए लोगों को लाला अथवा हाइलाकांदी जाना पडता है, जिससे समय और धन दोनों की अतिरिक्त हानि होती है। स्थानीय लोगों ने क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना का हवाला देते हुए नई गैस एजेंसी खोलने के लिए आवश्यक पहल करने का अनुरोध किया।ज्ञापन सौंपने वालों ने विधायक से दोनों मांगों को सरकार के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाने तथा शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने का आग्रह किया। विधायक डॉ. मिलन दास ने क्षेत्रवासियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए उन्हें उचित स्तर पर उठाने और समाधान के लिए प्रयास करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर स्थानीय समाजसेवी राजकुमार भर, किरण तेली, अभिषेक पांडेय, सत्यनारायण तेली दिलीप सिंह, अनिल थी, मंजू मोदी सहित कार्यक्रम में बडी संख्या में चाय बागान श्रमिक, स्थानीय निवासी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स ने सोनारी मार्केट का इंस्पेक्शन किया, एक्सपायर हो चुके खाने के सामान को नष्ट किया

चराइदेउ (अर्णव शर्मा) ३ जून :: एक डिस्ट्रिक्ट लेवल टास्क फोर्स ने सोनारी मार्केट एरिया में होलसेलर और रिटेलर का पूरी तरह से इंस्पेक्शन किया ताकि जरूरी चीजों की कीमतों पर नजर रखी जा सके और फूड सेफ्टी और कंज्यूमर प्रोटेक्शन के नियमों का पालन पक्का किया जा सके।इंस्पेक्शन टीम में फूड, पब्लिक डिस्ट्रिब्यूशन और कंज्यूमर अफेयर्स (FPD&CA) के सब-इंस्पेक्टर, ऋझअउअ और लीगल मेट्रोलॉजी (डच) के इंस्पेक्टर, फूड सेफ्टी ऑफिसर, सोनारी म्युनिसिपल बोर्ड के अधिकारी और प्राइस मॉनिटरिंग कंसल्टेंट/डेटा एंट्री ऑपरेटर (उत्र) शामिल थे।इस ड्राइव के दौरान, टीम ने जरूरी चीजों की कीमतों की जांच की, अपडेटेड स्टॉक और प्राइस बोर्ड के डिस्प्ले को वेरिफाई किया, सही कैश मेमो (पक्का बिल) जारी करने की जांच की, और खाने की चीजों के साफ-सुथरे स्टोरेज का आकलन किया। अधिकारियों ने रिकॉर्ड और डॉक्यूमेंट्स के मेंटेनेंस, वजन करने वाली मशीनों के सर्टिफिकेशन और स्टैम्पिंग, और पैकेज्ड फूड प्रोडक्ट्स की क्वालिटी, लेबलिंग और एक्सपायरी डेट की भी जांच की। इंस्पेक्शन से पता चला कि सोनारी मार्केट में जरूरी चीजों की कीमतें स्थिर रहीं, और कोई अजीब बढोतरी नहीं देखी गई। हालांकि, इस दौरान कुछ एक्सपायर हो चुके खाने के सामान मिले और उनकी बिक्री और इस्तेमाल को रोकने के लिए उन्हें तुरंत मौके पर ही नष्ट कर दिया गया। टास्क फोर्स ने कुछ व्यापारियों को नोटिस भी जारी किए, जिसमें उन्हें नमक जैसी जरूरी चीजों सहित खाने के सामान के स्टोरेज में साफ-सफाई के स्टैंडर्ड सुधारने का निर्देश दिया गया। व्यापारियों को सलाह दी गई कि वे फूड सेफ्टी नियमों का सख्ती से पालन करें और लोगों की सेहत की सुरक्षा के लिए साफ-सफाई के सही तरीके बनाए रखें।जिला प्रशासन ने रेगुलर मार्केट इंस्पेक्शन के जरिए ग्राहकों के हितों की रक्षा करने और लोगों को सुरक्षित और अच्छी क्वालिटी के खाने के सामान की उपलब्धता पक्का करने का अपना वादा दोहराया है।

चबुआ टी.ई. मॉडल स्कूल में तंबाकू जागरूकता प्रोग्राम हुआ

डिब्रूगढ़: (अर्णव शर्मा) ३ जून : वर्ल्ड नो टोबैको डे २०२६ मनाने के हिस्से के तौर पर, नेशनल टोबैको कंट्रोल प्रोग्राम (NTCP), डिब्रूगढ़ ने असम कैंसर केयर फाउंडेशन के तहत डिब्रूगढ़ कैंसर सेंटर के साथ मिलकर चबुआ टी.ई. मॉडल स्कूल में एक तंबाकू जागरूकता प्रोग्राम किया। इस प्रोग्राम का मकसद स्टूडेंट्स को तंबाकू खाने के नुकसानदायक असर के बारे में बताना और उन्हें हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाने के लिए बढावा देना था। रिसोर्स पर्सन ने तंबाकू के इस्तेमाल से जुडे गंभीर हेल्थ रिस्क, जैसे कैंसर, दिल की बीमारियों और सांस की बीमारियों के बारे में बताया, साथ ही कम उम्र से ही तंबाकू-फ्री रहने की अहमियत पर जोर दिया। स्टूडेंट्स को टोबैको-फ्री एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन (TOFEI) पहल की गाइडलाइंस और मकसद के बारे में भी बताया गया, जिसका मकसद एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन में एक सुरक्षित, हेल्दी और तंबाकू-फ्री माहौल बनाना है। यह जागरूकता ड्राइव वर्ल्ड नो टोबैको डे के मौके पर देश भर में चलाए जा रहे कैंपेन के हिस्से के तौर पर शिक्षा विभाग के सपोर्ट से चलाई गई थी। स्टूडेंट्स को क्रिएटिव तरीके से जोडने और एंटी-टोबैको मैसेज को मजबूत करने के लिए, प्रोग्राम के दौरान एक पोस्टर मेकिंग कॉम्पिटिशन रखा गया था। पार्टिसिपेंट्स ने इनोवेटिव आर्टवर्क और तंबाकू-फ्री समाज को बढावा देने वाले असरदार मैसेज के जरिए तंबाकू के इस्तेमाल के खतरों पर अपने विचार बताए। इस इवेंट में स्टूडेंट्स और टीचर्स ने जोश के साथ हिस्सा लिया, जो हेल्थ अवेयरनेस और तंबाकू की रोकथाम के प्रति बढते कमिटमेंट को दिखाता है। कॉम्पिटिशन के विजेताओं को सम्मानित किया गया, जबकि पार्टिसिपेंट्स को उनकी कोशिशों के लिए सर्टिफिकेट और प्राइज.दिए गए। ऑर्गनाइजर्स ने कहा कि इस तरह की अवेयरनेस पहल युवाओं को जानकारी देने और उन्हें सोच-समझकर फैसले लेने के लिए बढावा देने में अहम भूमिका निभाती हैं, जो एक हेल्दी भविष्य में योगदान देते हैं। प्रोग्राम स्टूडेंट्स और स्टाफ.के तंबाकू-फ्री रहने और अपने समुदायों में अवेयरनेस फैलाने के सामूहिक वादे के साथ खत्म हुआ, जिससे एक हेल्दी और तंबाकू-फ्री पीढी बनाने के साझा विजऩ को पक्का किया गया।

बरजात्रापुर में नव-निर्वाचित विधायक किशोर नाथ का भव्य अभिनंदन

बरजात्रापुर, प्रतिनिधि ३ जून: बरखाला विधानसभा क्षेत्र (११७) से नव-निर्वाचित विधायक किशोर नाथ का मंगलवार को बरजात्रापुर स्थित एक वेडिंग हॉल में भारतीय जनता पाटी (BJP) के श्रीकोना मंडल की ओर से भव्य स्वागत एवं अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम मंडल अध्यक्ष जॉय प्रकाश नारायण सिन्हा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें बडी संख्या में पाटी कार्यकर्ता एवं समर्थक उपस्थित रहे। अपने संबोधन में विधायक किशोर नाथ ने चुनाव में मिली ऐतिहासिक जीत के लिए पाटी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह विजय कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत, समर्पण और जनता के विश्वास का परिणाम है। उन्होंने कहा कि बरखाला की जनता ने उन पर जो भरोसा जताया है, उस पर वे पूरी तरह खरा उतरने का प्रयास करेंगे। विधायक ने आश्वासन दिया कि आगामी पांच वर्षों में वे क्षेत्र के सर्वांगीण विकास और जनसेवा के लिए निरंतर कार्य करेंगे तथा चुनाव के दौरान किए गए सभी वादों को चरणबद्ध तरीके से पूरा करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य बरखाला विधानसभा क्षेत्र को विकास के मामले में राज्य के अग्रणी विधानसभा क्षेत्रों में शामिल करना है। किशोर नाथ ने यह भी कहा कि लोकतंत्र में सभी नागरिक समान हैं और जिन्होंने उन्हें वोट दिया हो या नहीं दिया हो, वे सभी के विधायक हैं। क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति की समस्याओं के समाधान और विकास कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी। इस अवसर पर बरखाला मंडल के पूर्व अध्यक्ष अरिंदम नाथ ने संगठन की मजबूती पर जोर देते हुए कहा कि पाटी के हितों के विरुद्ध कार्य करने वाले तत्वों की पहचान करना आवश्यक है, ताकि संगठन को और अधिक सशक्त बनाया जा सके। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष जॅय प्रकाश नारायण सिन्हा, रामांशु शेखर नाथ, बेनुभूषण नाथ, पिकलू दास, चयन पाल, अमरेश नाथ, शम्स उद्दीन मजूमदार, अनिमा नाथ, अनवर हुसैन, खैरुल आलम मजूमदार, बिजॉय सिन्हा, मितानाथ भौमिक सहित अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं एवं गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह का समापन विधायक के प्रति शुभकामनाओं और बरखाला के विकास के संकल्प के साथ हुआ।

तिनसुकिया में जल जीवन मिशन और सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रोजेक्ट्स की प्रोग्रेस का रिव्यू किया गया

तिनसुकिया: (अर्णव शर्मा) ३ जून : जल जीवन मिशन (JJM) और सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट (डथच) प्रोजेक्ट्स की प्रोग्रेस पर एक डिस्ट्रिक्ट-लेवल रिव्यू मीटिंग तिनसुकिया में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर के ऑफिस में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर सुमित सत्तावन की अध्यक्षता में हुई।मीटिंग में पूरे जिले में जल जीवन मिशन की अलग-अलग स्कीमों के लागू होने की स्थिति का पूरी तरह से रिव्यू किया गया। चर्चा चल रहे कामों में तेजी लाने, मॉनिटरिंग सिस्टम को मजबूत करने और राज्य सरकार द्वारा तय समय-सीमा के अंदर सभी पेंडिंग प्रोजेक्ट्स को पूरा करने पर फोकस रही। जो ग्रामीण पानी सप्लाई स्कीमें काम नहीं कर रही हैं, उनकी स्थिति की भी जांच की गई, और अधिकारियों को उन्हें ठीक करने और असरदार तरीके से चलाने के लिए जरूरी कदम उठाने का निर्देश दिया गया।हर घर को सुरक्षित और भरोसेमंद पीने का पानी देने के महत्व पर जोर देते हुए, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने संबंधित डिपार्टमेंट्स से सभी चल रहे प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करने और प्रोग्रेस में रुकावट डालने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए कोशिशें तेज.करने को कहा। मीटिंग में स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (डइच-ऋ) के तहत सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट (SWM) इंफ्रास्ट्रक्चर को लागू करने का भी रिव्यू किया गया। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इस महीने के अंदर सभी पेंडिंग डथच इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स को पूरा करें और उन्हें संबंधित ग्राम पंचायतों को फॉर्मल तौर पर सौंप दें ताकि जमीनी स्तर पर अच्छे से ऑपरेशन और मेंटेनेंस हो सके।प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट्स के काम करने के तरीके और स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के तहत घर-घर जाकर कचरा इकट्ठा करने के लिए सप्लाई की गई ट्राइसाइकिलों की मौजूदा स्थिति पर भी चर्चा हुई। सस्टेनेबल वेस्ट मैनेजमेंट तरीकों की जरूरत पर जोर देते हुए, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने अधिकारियों को उपलब्ध रिसोर्स और इंफ्रास्ट्रक्चर का सबसे अच्छा इस्तेमाल सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।साफ पीने के पानी तक सबकी पहुंच और सस्टेनेबल वेस्ट मैनेजमेंट के दोहरे मकसद को पाने के लिए, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने सभी संबंधित अधिकारियों को रेगुलर फील्ड इंस्पेक्शन करने और जमीन पर प्रोजेक्ट को लागू करने पर करीब से नजर रखने का निर्देश दिया। मीटिंग में डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिश्नर जावेद अरमान, असिस्टेंट कमिश्नर मोवामेनला एओ, पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर जुगंता गोहेन, असिस्टेंट एग्जीक्यूटिव इंजीनियर, अकाउंटेंट और अलग-अलग संबंधित डिपार्टमेंट के अधिकारी मौजूद थे। रिव्यू मीटिंग में तिनसुकिया जिले के लोगों के फायदे के लिए बेहतर ग्रामीण पानी की सप्लाई, बेहतर सफाई इंफ्रास्ट्रक्चर और असरदार वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम पक्का करने के लिए जिला प्रशासन के कमिटमेंट को फिर से पक्का किया गया।

जोरहाट में बैंकिंग परफॉर्मेंस, कैदियों की रिहाई की प्रक्रिया और बाढ.की तैयारी का रिव्यू

जोरहाट:(अर्णव शर्मा) ३ जून : डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी की लीडरशिप में जोरहाट में कई जरूरी एडमिनिस्ट्रेटिव मीटिंग और इंस्पेक्शन किए गए, जिनमें जिले में बैंकिंग परफॉर्मेंस, कैदियों के रिहैबिलिटेशन और बाढ.की तैयारी के उपायों पर फोकस किया गया।डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी की अध्यक्षता में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस के कॉन्फ्रेंस हॉल में डिस्ट्रिक्ट कंसल्टेटिव कमेटी (DCC) और डिस्ट्रिक्ट लेवल रिव्यू कमेटी (DLRC) की एक जरूरी मीटिंग बुलाई गई। मीटिंग में मुख्य रूप से जनवरी से मार्च २०२६ के दौरान जोरहाट जिले में काम कर रहे बैंकों के परफॉर्मेंस का रिव्यू किया गया। सेशन के दौरान, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने अलग-अलग बैंकिंग इंस्टीट्यूशन में बैंक लेंडिंग, क्रेडिट डिस्बर्समेंट और नो योर कस्टमर (घधउ) कम्प्लायंस की लेटेस्ट स्थिति की जांच की। बैंकिंग सेक्टर से जुडे.कई जरूरी मुद्दों, जिनमें इंडस्ट्रियल लोन डिस्बर्समेंट और फाइनेंशियल इनक्लूजन इनिशिएटिव शामिल हैं, पर डिटेल में चर्चा की गई। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने संबंधित अधिकारियों और बैंकिंग अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे पहचानी गई चुनौतियों का तुरंत समाधान करने और जनता को बैंकिंग सेवाओं की आसान डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए जरूरी कदम उठाएं। मीटिंग में असिस्टेंट कमिश्नर, अलग-अलग बैंकों के सीनियर अधिकारी और संबंधित विभागों के प्रतिनिधि शामिल हुए। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर के ऑफिस में हुई एक और जरूरी मीटिंग में, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी ने जोरहाट की महेंद्र नगर ओपन जेल से दो कैदियों की प्रस्तावित रिहाई के बारे में एक रिव्यू सेशन की अध्यक्षता की। मीटिंग में कैदियों की रिहाई से जुडे.सभी कानूनी नियमों, योग्यता के मानदंडों और प्रक्रिया की जरूरतों की जांच करने पर ध्यान दिया गया। अधिकारियों ने इस मामले पर विस्तार से विचार-विमर्श किया ताकि यह पक्का किया जा सके कि सभी फैसले तय कानूनी नियमों और पुनर्वास नीतियों के अनुसार लिए जाएं।मौजूद लोगों में सब-डिविजनल ऑफिसर (सिविल), मरियानी, असिस्टेंट कमिश्नर, जोरहाट कोर्ट के सेशन जज, महेंद्र नगर ओपन जेल के सुपरिंटेंडेंट, डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस (बॉर्डर) और ओपन जेल के ऑफिसर-इन-चार्ज शामिल थे। विस्तार से चर्चा के बाद, अधिकारियों ने तय नियमों और रेगुलेशन के अनुसार जरूरी औपचारिकताओं को पूरा करने का फैसला किया।आने वाले मॉनसून सीजऩ और संभावित बाढ.के हालात की तैयारी के तहत, जलि़ा प्रशासन ने इमरजेंसी के दौरान राहत सामग्री देने के लिए जम़्मेिदार पैनल वाले वेंडर और सप्लायर के गोदामों का इंस्पेक्शन किया।इंस्पेक्शन को एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर और डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (DDMA) के चीफ.एग्जीक्यूटिव ऑफसिर ने लीड किया। एनिमल हस्बैंड्री और वेटेरिनरी डिपार्टमेंट, फूड और सिविल सप्लाई डिपार्टमेंट और ऊच्चअ के अधिकारियों ने भी फील्ड विजटि में हिस्सा लिया। इंस्पेक्शन का मकसद जरूरी राहत सामग्री की उपलब्धता और स्टोरेज का पता लगाना, लॉजिस्टिक इंतजामों को वेरिफाई करना और जानवरों के चारे और दूसरी इमरजेंसी सप्लाई की क्वालिटी पक्का करना था। अधिकारियों ने जलि़े में बाढ.से जुडे.किसी भी संकट के दौरान तेजी.से जवाब देने के लिए काफी.स्टॉक और तैयारी बनाए रखने की अहमियत पर जोर दिया।जिला प्रशासन ने आपदा की तैयारी के सिस्टम को मजबूत करने और बाढ.की स्थिति में प्रभावित समुदायों को समय पर मदद पक्का करने का अपना वादा दोहराया।

डिब्रूगढ.में डिस्ट्रिक्ट लेवल की मीटिंग में रोड सेफ्टी के तरीकों का रिव्यू

डिब्रूगढ:(अर्णव शर्मा) ३ जून : डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस, डिब्रूगढ.के वीडियो कॉन्फ्रेंस हॉल में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर बिक्रम कैरी की अध्यक्षता में और सीनियर सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस अभिजीत गौरव दिलीप की मौजूदगी में डिस्ट्रिक्ट लेवल की रोड सेफ्टी कमिटी की मीटिंग हुई।मीटिंग में रोड सेफ्टी की कोशिशों का रिव्यू करने और पूरे जिले में ट्रैफिक मैनेजमेंट और पब्लिक सेफ्टी को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की गई। असम के मुख्यमंत्री द्वारा जारी किए गए निर्देशों और सुझावों पर डिटेल में चर्चा की गई, जिनका मकसद रोड सेफ्टी स्टैंडर्ड को बढाना और नागरिकों के लिए सुरक्षित सफर पक्का करना है।मीटिंग के दौरान, अधिकारियों ने अलग-अलग रोड सेफ्टी तरीकों को लागू करने का आकलन किया और ट्रैफिक रेगुलेशन को बेहतर बनाने, रोड सेफ्टी कानूनों को लागू करने, दुर्घटनाओं को रोकने और लोगों में जागरूकता बढाने के तरीकों का रिव्यू किया। रोड सेफ्टी मैनेजमेंट में शामिल डिपार्टमेंट के बीच तालमेल को मजबूत करने पर खास जोर दिया गया।पार्टिसिपेंट्स ने जिले में मौजूदा रोड सेफ्टी हालात की भी जांच की और एनफोर्समेंट ड्राइव को तेज करने, ट्रैफिक नियमों का पालन बेहतर बनाने और लगातार जागरूकता कैंपेन के जरिए जिम्मेदारी से सडक़ इस्तेमाल को बढावा देने के तरीकों पर चर्चा की। मीटिंग में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट ट्रांसपोर्ट ऑफिसर, पुलिस और ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के अधिकारियों के साथ-साथ दूसरे संबंधित डिपार्टमेंट के हेड और रिप्रेजेंटेटिव शामिल हुए। हिस्सा लेने वालों ने मिलकर काम करने और सेफ्टी उपायों को असरदार तरीके से लागू करके रोड सेफ्टी बढाने और ट्रैफिक से जुडे.खतरों को कम करने का अपना वादा दोहराया।डिस्ट्रिक एडमिनिस्ट्रेशन ने इस बात पर जोर दिया कि डिब्रूगढ.में सुरक्षित सडक़ें बनाने और एक्सीडेंट रोकने के लिए लगातार सावधानी, ट्रैफिक नियमों का सख्ती से पालन और लोगों की सक्रिय भागीदारी बहुत जरूरी है।

चराईदेउ ने युवाओं को आर्म्ड फोर्स में करियर बनाने के लिए अग्निवीर तैयारी प्रोग्राम होस्ट किया

चराईदेउ:(अर्णव शर्मा) ३ जून : युवाओं को मजबूत बनाने और देश की डिफेंस सर्विसेज.में हिस्सा लेने के लिए बढावा देने के मकसद से एक बडी पहल में, चराईदेउ के डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन ने इंडियन आर्मी, असम राइफल्स (रेड शील्ड गनर्स) और असम पुलिस के साथ मिलकर सेपोन हाई स्कूल में सफलतापूर्वक अग्निवीर तैयारी प्रोग्राम ऑर्गनाइज.किया। इस प्रोग्राम में १०१ इच्छुक कैंडिडेट्स ने जोश के साथ हिस्सा लिया, जिनमें ८३ पुरुष और १८ महिला कैंडिडेट्स शामिल थे, जिन्होंने आने वाली अग्निवीर भर्ती प्रोसेस से पहले एक पूरी स्क्रीनिंग और मोटिवेशनल ड्राइव में हिस्सा लिया। यह पहल युवा उम्मीदवारों को आर्म्ड फोर्स में करियर बनाने के लिए जरूरी जानकारी, स्किल्स और कॉन्फिडेंस देने के लिए डिजाइन की गई थी। पार्टिसिपेंट्स को फिज़िकल फिटनेस ट्रेनिंग, लिखित परीक्षा की तैयारी, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, इंटरव्यू टेक्नीक, लीडरशिप क्वालिटीज, डिसिप्लिन और देशभक्ति के मूल्यों पर गाइडेंस मिली। भविष्य में भर्ती के मौकों के लिए कैंडिडेट्स की तैयारी का अंदाजा लगाने के लिए स्क्रीनिंग एक्टिविटीज.भी की गई। प्रोग्राम में महमोरा के MLA सुरुज देहिंगिया, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर डॉ. नेहा यादव, IAS, को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर (महमोरा) दिनचेंगफा बरुआ, अउड, असिस्टेंट कमिश्नर और एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट विवेक शर्मा, अउड, और उउह्झ, महमोरा, गजानंद शर्मा, अझड शामिल हुए। इकट्ठा हुए लोगों को संबोधित करते हुए, गणमान्य लोगों ने हिस्सा लेने वालों को अपने लक्ष्यों के प्रति फोकस्ड, डिसिप्लिन्ड और कमिटेड रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने आर्म्ड फोर्सेज.के जरिए देश की सेवा करने के महत्व पर जोर दिया और युवाओं से लीडरशिप क्वालिटीज, फिजिकल फिटनेस और डेडिकेशन की भावना बढाने की अपील की।अधिकारियों ने कहा कि यह प्रोग्राम एडमिनिस्ट्रेशन और सिक्योरिटी फोर्सेज.की मिलकर की गई कोशिश को दिखाता है ताकि असम के युवाओं को आर्म्ड फोर्सेज.में मौकों के लिए मोटिवेट और तैयार किया जा सके, साथ ही देश सेवा और जम़्मेिदारी की मजबूत भावना को बढावा दिया जा सके। यह इवेंट हिस्सा लेने वालों के बीच नए जोश के साथ खत्म हुआ, जिनमें से कई ने डिफेंस सेक्टर में करियर बनाने और देश बनाने में योगदान देने का पक्का इरादा जताया।अग्निवीर तैयारी प्रोग्राम से मिलिट्री करियर के बारे में जागरूकता बढाने और भविष्य की भर्ती ड्राइव के लिए चराईदेउ जिले से अच्छी तरह से तैयार उम्मीदवारों का एक पूल बनाने में अहम भूमिका निभाने की उम्मीद है।

AMCH गवर्निंग बॉडी ने हेल्थकेयर, एजुकेशन और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट का रिव्यू किया

डिब्रूगढ: (अर्णव शर्मा) ३ जून : असम मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (AMCH) की एक जरूरी गवर्निंग बॉडी मीटिंग बुधवार को डिब्रूगढ.के कॉलेज कैंपस में हुई। मीटिंग में हेल्थकेयर सर्विस को मजबूत करने, मेडिकल एजुकेशन को बढाने और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में तेजी लाने पर फोकस किया गया।मीटिंग में पेशेंट केयर सुविधाओं को बेहतर बनाने, एकेडमिक रिसोर्स बढाने और इंस्टीट्यूशन के पूरे इंफ्रास्ट्रक्चर को मॉडर्न बनाने के मकसद से चल रही और प्रस्तावित कई कोशिशों का रिव्यू किया गया। मेंबर्स ने इस खास मेडिकल इंस्टीट्यूशन की लगातार ग्रोथ और इलाके की बदलती हेल्थकेयर जरूरतों को पूरा करने की इसकी काबिलियत को पक्का करने के लिए स्ट्रेटेजी पर बातचीत की। मीटिंग में शामिल हुए, प्रशांत फुकन ने खास डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स पर चर्चा में हिस्सा लिया और इंस्टीट्यूशन में अभी चल रहे अलग-अलग इंफ्रास्ट्रक्चर कामों की प्रोग्रेस का अंदाजा लगाया। हेल्थकेयर डिलीवरी को बेहतर बनाने, मेडिकल सुविधाओं को अपग्रेड करने और मेडिकल स्टूडेंट्स और हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स के लिए ज्य़ादा अच्छा माहौल बनाने पर जोर दिया गया। मीटिंग में अचउक के प्रिंसिपल डॉ. संजीव काकोटी और डिब्रूगढ.म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के मेयर डॉ. सैकत पात्रा के साथ-साथ दूसरे सीनियर अधिकारी और गवर्निंग बॉडी के सदस्य भी शामिल हुए। हिस्सा लेने वालों ने इंस्टीट्यूशनल एफिशिएंसी, पेशेंट-सेंट्रिक सर्विसेज.और मेडिकल ट्रेनिंग की क्वालिटी को और बेहतर बनाने के तरीकों पर अपने विचार शेयर किए।बातचीत सभी स्टेकहोल्डर्स की ओर से हेल्थकेयर डिलीवरी सिस्टम को मजबूत करने, मेडिकल एजुकेशन में बेहतरीन काम को बढावा देने और नॉर्थईस्ट में एक लीडिंग हेल्थकेयर और एकेडमिक इंस्टीट्यूशन के तौर पर असम मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल के लगातार डेवलपमेंट को पक्का करने के नए कमिटमेंट के साथ खत्म हुई।

एक बिहारी सब पर भारी, फिर...', विराट कोहली ने वैभव सूर्यवंशी को दिया तगड़ा मोटिवेशन

नई दिल्ली (एजें) ३ जून : आईपीएल २०२६ के फाइनल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की जीत के बाद एक वीडियो तेजी से वायरल हुआ था, जिसमें वैभव सूर्यवंशी और विराट कोहली के बीच कुछ बातचीत होती नजर आई थी. फैंस ने इस वीडियो को खूब पसंद किया था. अब ठउइ ने कोहली और वैभव की मुलाकात का वीडियो शेयर किया, जिसमें फैंस को सुनाई दिया कि दोनों के बीच क्या बातचीत हुई. वीडियो के अंत में कोहली ने वैभव से कहा, 'एक बिहारी सब पर भारी.'वीडियो में कोहली ने वैभव को सलाह देते हुए कहा, 'यहां से ऊपर जाना है. जो हुआ वो अच्छी मेहनत और यकीन के वजह से हुआ है. अभी कौन क्या बोल रहा है, कैसे बोल रहा है... मत सुनो. बैट और तुम... सिर्फ इस पर फोकस रखो. एक बिहारी सब पर भारी. फिर गेम खत्म.'
आईपीएल सीजन में वैभव सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बने थे, जिसके लिए उन्हें ऑरेंज कैप का अवॉर्ड मिला था. वैभव ने १६ मैचों की १६ पारियों में ४८.५० की औसत और २३७.३१ के स्ट्राइक रेट से ७७६ रन बनाए थे. इस दौरान उनके बल्ले से १ शतक और ५ अर्धशतक निकले थे. वैभव ने सीजन में ७२ छक्के लगाए थे. वह सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज भी थे, जिसके लिए उन्हें 'सुपर सिक्सर' का अवॉर्ड दिया गया था. वैभव एक सीजन में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज बने थे. उन्होंने ७२ छक्के लगाए थे, जिसके साथ क्रिस गेल का रिकॉर्ड तोड.दिया था. गले ने गेल ने २०१२ में ५९ छक्के जडे.थे. इसके अलावा वैभव को सुपर स्ट्राइकर का अवॉर्ड भी मिला था. इसके उन्हें इनाम के तौर पर टाटा सिएरा कार दी गई थी. बाकी वैभव को इमर्जिंग प्लेयर ऑफ द सीजन और मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर ऑफ द सीजन जैसे अवॉर्ड भी मिले थे.

बडा प्रशासनिक फेरबदल: लोखंडे प्रशांत सीताराम नए चेयरमैन, वरुण भारद्वाज को सचिव नियुक्त किया गया

नई दिल्ली (एजें) ३ जून :. केंद्र सरकार ने सीबीएसई से जुडे.मामलों में बडा प्रशासनिक कदम उठाते हुए बोर्ड के चेयरमैन राहुल सिंह और सचिव हिमांशु गुप्ता के तबादले के बाद इन अधिकारियों के स्थान पर नए अधिकारियों की नियुक्ति की गई है. वरिष्ठ आईएएस अधिकारी लोखंडे प्रशांत सीताराम सीबीएसई के नए प्रमुख नियुक्त किया गया है. वहीं, सीनियर ब्यूरोक्रेट वरुण भारद्वाज सीबीएसई के नए सचिव होंगे.गृह मंत्रालय के गृह विभाग के तहत अतिरिक्त सचिव के रूप में सेवा दे रहे वरिष्ठ आईएएस अधिकारी लोखंडे प्रशांत सीताराम अब सीबीएसई की कमान संभालेंगे. वहीं, राहुल सिंह को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन कृषि एवं किसान कल्याण विभाग में अतिरिक्त सचिव के रूप में नियुक्त किया गया है. १९ अप्रैल २०२७ तक होगा नए सचिव का कार्यकालकैबिनेट की नियुक्ति समिति ने इस निर्णय को मंजूरी दी है. शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के प्रस्ताव के अनुसार, उच्च शिक्षा विभाग के निदेशक वरुण भारद्वाज को सीबीएसई के सचिव (निदेशक स्तर) के पद पर नियुक्त किया गया है. यह नियुक्ति केंद्रीय स्टाफिंग योजना के तहत प्रतिनियुक्ति के आधार पर, हिमांशु गुप्ता के स्थान पर लैटरल शिफ्ट के रूप में की गई है, जिसकी अवधि १९.०९.२०२७ तक (यानी, केंद्रीय स्टाफिंग योजना के तहत कुल ०५ वर्ष का कार्यकाल) होगी.ओएसएम ठेका प्रक्रिया की जांच के लिए समिति गठित इसके साथ ही सीबीएसई द्वारा ऑन-स्क्रीन मार्किंग (ओएसएम) सेवाओं की खरीद प्रक्रिया की जांच के लिए एक विशेष जांच समिति का गठन किया गया है.सूत्रों के अनुसार यह जांच समिति ओएसएम सेवाओं की खरीद, टेंडर प्रक्रिया और उससे जुडे.विभिन्न पहलुओं की पडताल करेगी. जारी आदेश के अनुसार इस जांच समिति की अध्यक्षता कैपेसिटी बिल्डिंग कमीशन की चेयरपर्सन एस. राधा चौहान करेंगी. समिति को सीबीएसई द्वारा ओएसएम सिस्टम के लिए सेवाओं की खरीद से जुडे.सभी मामलों की जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है.सरकारी आदेश में कहा गया है कि समिति की अध्यक्ष एस. राधा चौहान आवश्यकता पड? पर अन्य विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों की सहायता भी ले सकेंगी. वहीं समिति को सचिवीय सहायता कैपेसिटी बिल्डिंग कमेटी द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी.सरकार ने जांच समिति को अपनी रिपोर्ट एक महीने के भीतर कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीपीओटी) को सौंपने के निर्देश दिए हैं. गौरतलब है कि पिछले दिनों से सीबीएसई की ऑन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली, मूल्यांकन प्रक्रिया और ओएसएम टेंडर प्रक्रिया को लेकर कई सवाल उठे थे. इसी बीच छात्रों और विभिन्न संगठनों ने भी पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग की थी. अब सरकार के इस फैसले को सीबीएसई मामलों में जवाबदेही तय करने की दिशा में बडा कदम माना जा रहा है.

माजुली में नाबालिग के साथ बलात्कार के छह आरोपित गिरफ्तार

माजुली (असम), ०३ जून (हि.स.)। माजुली में एक नाबालिग लडक़ी के साथ बलात्कार करने के आरोप में पुलिस ने छह लोगों को गिरफ्तार किया है। इस घटना ने पूरे क्षेत्र में व्यापक आक्रोश पैदा किया है।पुलिस सूत्रों के अनुसार, आरोपितों ने घर में लोगों की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर बलात्कार किया। इतना ही नहीं, शिकायत में यह भी उल्लेख है कि पीडिता को किसी को सूचित न करने की धमकी दी गई और चेतावनी दी गई कि उसके जान को खतरा होगा।पीडिता की शिकायत के आधार पर, पुलिस ने जांच शुरूकी और छह आरोपितों को गिरफ्तार किया। इस बीच, पुलिस घटना से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जांच जारी रखे हुए है।इस घटना के चलते क्षेत्र में व्प्रयापक तिक्रिया व्याप्त है और अपराधियों के खिलाफ सख्त सजा की मांग उठाई है। पुलिस कानून के अनुसार आगे की कार्रवाई कर रही है।

बीटीसी भूमि संरक्षण विभाग की कार्यप्रणाली में आएगी तेजी: कार्यकारी सदस्य करमेश्वर राय ने की समीक्षा बैठक

कोकराझाड: प्रे.सं.३ जून :बीटीसी (BTC) सरकार के अंतर्गत भूमि संरक्षण विभाग के कामकाज को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और गतिमान बनाने के उद्देश्य से कार्यकारी सदस्य (एच) करमेश्वर राय ने आज कोकराझाड.का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने विभाग के उच्च अधिकारियों के साथ एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की और विभागीय कामकाज की प्रगति का जायजा लिया। कार्यकारी सदस्य करमेश्वर राय ने अपने दौरे की शुरुआत भूमि संरक्षण विभाग के सीएचडी (CHD) कार्यालय और कोकराझाड. जिला डीओ (ऊज) कार्यालय के औचक निरीक्षण से की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यालयों की कार्यशैली और फाइलों के रखरखाव की स्थिति को बारीकी से परखा। निरीक्षण के उपरांत, विभागीय अधिकारियों के साथ आयोजित उच्च-स्तरीय बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक में वर्तमान में चल रही विभिन्न विकास योजनाओं की अद्यतन स्थिति और लंबित परियोजनाओं के शीघ्र निपटान पर विशेष जोर दिया गया। ?समयबद्ध निष्पादन: ईएम करमेश्वर राय ने सख्त निर्देश दिए कि विभागीय फाइलों और निर्माणाधीन कार्यों को एक तय समय सीमा के भीतर पूरा किया जाए, ताकि जनता को अनावश्यक इंतजार न करना पड़े। ?कार्यक्षमता और पारदर्शिता: विभाग के दैनिक कामकाज को अधिक सुचारू और पारदर्शी बनाने के लिए नई कार्यप्रणाली अपनाने पर सहमति बनी। ?जनहित सर्वोपरि: उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि क्षेत्र की भूमि संरक्षण संबंधी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाए। आम जनता को मिलने वाली सेवाओं को सुगम बनाना विभाग का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। बैठक के दौरान विभागीय अधिकारियों ने अपने कार्यों में आने वाली चुनौतियों के साथ-साथ उपलब्धियों को साझा किया। कार्यकारी सदस्य के मार्गदर्शन में विभाग के सुदृढीकरण के लिए एक ठोस रणनीति तैयार की गई। अधिकारियों ने विश्वास दिलाया कि वे आने वाले समय में विभाग की कार्यप्रणाली में अधिक जवाबदेही और तत्परता लाएंगे, जिससे आम नागरिकों को सीधे लाभ मिल सके।
इस समीक्षा बैठक को क्षेत्र के विकास कार्यों में गति लाने के लिए एक सकारात्मक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

पटना में खान सर के कोचिंग सेंटर पर हमला मामले में ज्ञान बिंदु के डायरेक्टर रौशन आनंद गिरफ्तार

पटना. (एजें) ३ जून : सुप्रसिद्ध खान सर के कोचिंग संस्थान पर हुए पथराव और तोडफ़ोड.मामले में पुलिस ने बडी कार्रवाई की है. इस मामले में ज्ञान बिंदु कोचिंग संस्थान के डायरेक्टर रौशन आनंद समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है. पटना पुलिस ने तीनों की गिरफ्तारी की पुष्टि की है. पुलिस के मुताबिक गिरफ्तार किए गए लोगों से पहले लंबी पूछताछ की गई. इसके बाद उपलब्ध सबूतों और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर उन्हें गिरफ्तार किया गया. एसडीपीओ ने बताया कि मामले की जांच के दौरान मिले वीडियो फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की गई है.पुलिस का आरोप है कि रौशन आनंद के कहने पर कुछ लोगों ने खान ग्लोबल स्टडीज कोचिंग संस्थान के बाहर पथराव, तोडफ़ोड.और मारपीट की घटना को अंजाम दिया. जांच में सामने आया है कि कई लोगों ने मिलकर इस पूरी घटना की योजना बनाई थी.कब हुआ था हमला?यह घटना २ जून २०२६ की रात करीब १०:१० बजे कदमकुआं थाना क्षेत्र के मुसल्लहपुर हाट स्थित खान ग्लोबल स्टडीज कोचिंग संस्थान के बाहर हुई थी. घटना के दौरान कुछ लोगों ने कोचिंग सेंटर पर ईट-पत्थर फेंके और तोडफ़ोड.की. इस दौरान संस्थान का एक सुरक्षा गार्ड घायल हो गया, जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया.घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरूकर दी. आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई और स्थानीय लोगों से पूछताछ की गई. शुरुआती जांच में पता चला कि ज्ञान बिंदु कोचिंग संस्थान से जुडे.१५ से २० लोगों ने कथित तौर पर इस घटना में हिस्सा लिया था.हालांकि, पुलिस ने साफ किया है कि अब तक की जांच और सीसीटीवी फुटेज में गोलीबारी की पुष्टि नहीं हुई है. पुलिस का कहना है कि मामले की जांच अभी भी जारी है और घटना में शामिल अन्य लोगों की पहचान कर उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है. पुलिस ने कहा है कि कानून व्यवस्था बिगाड? वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और दोषियों को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जाएगा

शिवसागर के विधायक अखिल गोगोई की मां का ९६ साल की उम्र में निधन

गुवाहाटी, ०३ जून (हि.स.)। रायजोर दल के प्रमुख और शिवसागर से विधायक अखिल गोगोई की मां प्रियदा गोगोई का बुधवार सुबह गुवाहाटी में लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। वह ९६ साल की थीं। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार, प्रियदा गोगोई लंबे समय से उम्र से जुडी बीमारियों का इलाज करवा रही थीं और सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके निधन पर पूरे असम में राजनीतिक नेताओं, समर्थकों और शुभचिंतकों की ओर से शोक संवेदनाओं का तांता लग गया है।अखिल गोगोई अपनी मां के अंतिम पलों में उनके पास मौजूद थे और काफी भावुक नजर आ रहे थे। राज्य सरकार के मुखर विरोधी और जनहित के मुद्दों पर अपनी सक्रियता के लिए जाने जाने वाले इस अनुभवी विधायक ने इस क्षति को एक गहरा निजी दुख बताया।उनके पार्थिव शरीर को जोरहाट जिले के मोरियानी के पास सेलेनघाट ले जाया जा रहा है, जहां परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों और समर्थकों की मौजूदगी में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।प्रियदा गोगोई ने अपने बेटे की राजनीतिक यात्रा में, खासकर २०२१ के असम विधानसभा चुनावों के दौरान, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उस समय जब अखिल गोगोई सीएए विरोधी प्रदर्शनों के सिलसिले में जेल में बंद थे और शिवसागर निर्वाचन क्षेत्र से एक स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड.रहे थे, तब वह उनके सबसे दृढ.प्रचारकों में से एक बनकर उभरी थीं।

असम प्रदेश कांग्रेस में सतह पर आया अंतर्कलह, तंजिल हुसैन की नियुक्ति पर रोक

गुवाहाटी, ०३ जून (हि.स.)। असम प्रदेश कांग्रेस में अंतर्कलह एक बार फिर खुलकर सामने आ गया है। असम प्रदेश युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष पद पर हुई तंजिल हुसैन की नियुक्ति को कांग्रेस हाईकमान ने अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया है।जानकारी के अनुसार, तंजिल हुसैन को युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष पद पर जुबैर आलम ने नियुक्त किया था। हालांकि, उनकी नियुक्ति पर पार्टी के भीतर ही विरोध के स्वर उठने लगे, जिसके बाद कांग्रेस हाईकमान ने इस नियुक्ति पर रोक लगाने का निर्णय लिया।सूत्रों के मुताबिक, असम प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई के समर्थक खेमे की आपत्ति के चलते यह स्थगनादेश जारी किया गया। इस घटनाक्रम ने प्रदेश कांग्रेस में गुटबाजी और आंतरिक मतभेदों की चर्चाओं को और तेज कर दिया है।कांग्रेस हाईकमान द्वारा जारी आदेश के अनुसार तंजिल हुसैन की नियुक्ति अगले आदेश तक प्रभावी नहीं रहेगी। इस बीच, पार्टी के भीतर चल रहे मतभेदों को लेकर राजनीतिक गलियारों में विभिन्न प्रकार की चर्चाएं जारी हैं।

एसएसबी ने सीमावती ग्रामीणों के जीवन में फैलाई रोशनी, स्ट्रीट लाइटों का किया वितरण

कोकराझार प्रे.सं. ३ जून : भारत-भूटान अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) ने सुरक्षा के साथ-साथ जनसेवा की मिसाल पेश की है। छठी वाहिनी एसएसबी, रानीगुली द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास और ग्रामीणों के जीवन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से एक विशेष सामुदायिक कल्याण शिविर का आयोजन किया गया।छठी वाहिनी एसएसबी के कमांडेंट श्री रवींद्र कुमार के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का नेतृत्व सहायक कमांडेंट श्री महामृत्युंजय कुमार पाठक ने किया। सीमा चौकी तुकराबस्ती के कार्यक्षेत्र अंतर्गत आने वाले तुकराबस्ती और सोनापुर गांव में आयोजित इस शिविर में स्थानीय ग्रामीणों को स्ट्रीट लाइटें वितरित की गई।इस पहल का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करना और लोगों को स्वच्छ एवं सतत ऊर्जा के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना है। स्ट्रीट लाइट लगने से न केवल गांव की सडक़ों पर सुरक्षा बढेग़ी, बल्कि ग्रामीणों का दैनिक जीवन भी अधिक सुविधाजनक और सुरक्षित होगा।इस नेक कार्य के लिए ग्रामीणों ने एसएसबी का हृदय से आभार व्यक्त किया। स्थानीय निवासियों का कहना है कि एसएसबी द्वारा की गई यह पहल सीमावर्ती जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाएगी। ग्रामीणों ने कहा कि बल के इस मानवीय दृष्टिकोण ने उनके और सुरक्षा बलों के बीच के संबंधों को और अधिक सुदृढ.किया है।सशस्त्र सीमा बल अपनी पारंपरिक भूमिका यानी सीमाओं की सुरक्षा के साथ-साथ सीमावर्ती आबादी के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए भी निरंतर तत्पर है। बल द्वारा समय-समय पर आयोजित किए जाने वाले ऐसे नागरिक कल्याण और जनजागरूकता कार्यक्रम स्थानीय जनता के साथ सौहार्दपूर्ण तालमेल स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अहमदाबाद में १६६ बांग्लादेशी पकडे.गए:३०० से ज्यादा संदिग्ध हिरासत में लिए गए

अहमदाबाद (एजें) ३ जून : अहमदाबाद क्राइम ब्रांच ने अवैध घुसपैठ के खिलाफ कार्रवाई करते हुए शहर के तीन इलाकों से ३०० से ज्यादा संदिग्धों को हिरासत में लिया है। जांच में १६६ बांग्लादेशी पाए गए हैं, जबकि अन्य संदिग्धों के डॉक्यूमेंट्स की जांच की जा रही है।२ जून की रात चलाए गए अभियान में अहमदाबाद पुलिस और क्राइम ब्रांच ने चंडोला, गुलाबनगर और खोडियारनगर क्षेत्रों में कार्रवाई की थी। हिरासत में लिए गए सभी लोगों को क्राइम ब्रांच कैंपस में रखा गया है।क्राइम ब्रांच के अधिकारियों ने बताया कि चंदोला इलाके में लगातार चल रहे अभियानों के कारण बडी संख्या में अवैध निवासी एक जगह टिकने से बच रहे हैं। वे पहचान बदलकर शहर के अलग-अलग इलाकों में किराए के मकानों, झुग्गी-झोपडिय़ों, होटलों, कामगार आवासों और व्यावसायिक स्थानों में रह रहे हैं। इसलिए पूरे शहर में एक साथ तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। अवैध प्रवासियों को पकडऩे की कार्रवाई लंबी चलने वाली है।पूछताछ में कुछ बांग्लादेशियों ने कबूल किया है कि वे यहां कमाए गए पैसे बांग्लादेश में रहने वाले परिवार को कैश में भेजते थे। इसके लिए वे दलालों का सहारा लेते थे। पहले पैसे कोलकाता भेजे जाते थे, वहां से बांग्लादेश पहुंचते थे।यह भी पता चला है कि कुछ मोबाइल एप्लिकेशन के जरिए भी पैसे भेजे जा रहे थे। पुलिस इन दलालों की तलाश में जुटी है। साइबर क्राइम की टीमें भी मोबाइल से मिले एप्लीकेशंस की जांच कर रही हैं।क्राइम ब्रांच जेसीपी शरद सिंघल ने बताया कि जब टीमें ओधव इलाके के क्रिस्टल कॉम्प्लेक्स पहुंचीं तो कुछ स्पा सेंटरों में अफरा-तफरी मच गई थी। जांच में पता चला कि कुछ स्पा सेंटरों में बांग्लादेशी लडकियां काम कर रही थीं। पुलिस के पहुंचने से पहले स्पा मैनेजर फरार हो गया और स्पा सेंटर को बाहर से ताला लगा गया।अंदर फंसी लडकियों को दरवाजा तोडक़र निकालने की कोशिश की जा रही थी। तभी कुछ लडकियां खिडकियों से कूदकर फरार हो गई। उन्हें भगाने के लिए नीचे खडे.कुछ स्थानीय लोगों ने सीढिय़ां लगा दी थीं। इनमें से कुछ लडकियों को हिरासत में लिया गया है। उनकी मदद करने वालों की भी तलाश की जा रही है।गौरतलब है कि पिछले साल गुजरात पुलिस और अहमदाबाद नगर निगम ने अवैध प्रवासियों और अवैध बस्तियों के खिलाफ बडे.पैमाने पर अभियान चलाया था। विशेष रूप से चंडोला झील क्षेत्र में व्यापक कार्रवाई की गई थी। इस दौरान अहमदाबाद से ८९० और सूरत से १३४ बांग्लादेशी प्रवासियों को हिरासत में लिया गया था। इनमें से ६०० से ज्यादा के बांग्लादेशी होने की पुष्टि हुई थी।

पुरुषोत्तम मास में श्री जानकी वल्लभ मंदिर, दिसपुर में संगीतमय अखण्ड रामचरितमानस पाठ संपन्न

विशेष प्रतिनिधि गुवाहाटी, ३ जून। विशेष परम पावन पुरुषोत्तम मास (मलमास) के शुभ अवसर पर दिसपुर स्थित श्री जानकी वल्लभ मंदिर में ३० एवं ३१ मई २०२६ को आयोजित दो दिवसीय संगीतमय अखण्ड श्रीरामचरितमानस पाठ श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बडी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर रामभक्ति की अलौकिक अनुभूति प्राप्त की।अनुष्ठान का शुभारम्भ मंदिर के प्रतिष्ठापक अशोक अग्रवाल 'भूत' तथा वरिष्ठ समाजसेवी काशीराम शर्मा द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके उपरांत आचार्य पं. गोपाल जी ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ संकल्प सम्पन्न कराया और विद्वानों एवं भक्तजनों की सहभागिता से अखण्ड रामचरितमानस पाठ आरम्भ हुआ।
३० मई को सायं ४ बजे प्रारम्भ हुआ यह पावन अनुष्ठान ३१ मई को सायं ६ बजे विधिवत विश्राम को प्राप्त हुआ। इस दौरान दिसपुर एवं गुवाहाटी के विभिन्न क्षेत्रों से आए श्रद्धालुओं ने श्रीराम नाम संकीर्तन, मानस पाठ, भजन-कीर्तन तथा धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया। पूरे मंदिर परिसर में भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा का वातावरण बना रहा।समापन अवसर पर आरती, पुष्पांजलि एवं महाप्रसाद वितरण का आयोजन किया गया। भक्तों ने पुरुषोत्तम मास की महिमा का स्मरण करते हुए भगवान श्रीराम के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की तथा धर्म और सत्संग के महत्व को आत्मसात किया। उपस्थित श्रद्धालुओं का उत्साह ऐसा था कि मंदिर परिसर 'जय श्रीराम' के उद्घोष से गूंज उठा और वातावरण अयोध्या धाम की भक्ति-रसपूर्ण छटा का आभास करा रहा था।मंदिर परिवार की ओर से आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी श्रद्धालुओं, पुण्यदाताओं, सेवाभावी कार्यकर्ताओं एवं भक्तजनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया गया। आयोजन का संचालन मंदिर के पुरोहित वर्ग के नेतृत्व में हुआ। आचार्य पं. गोपाल जी ने अपने संबोधन में कहा कि भगवान श्रीराम की भक्ति, सत्संग और धर्ममार्ग मानव जीवन में सद्भाव, नैतिकता तथा आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से भविष्य में भी ऐसे धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयोजनों में बढ-़चढक़र सहभागिता करने का आह्वान किया।अंत में मंदिर प्रबंधन समिति ने सभी भक्तों एवं सहयोगकर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भगवान श्रीराम से सभी के सुख, समृद्धि एवं कल्याण की कामना की।

दुमदुमा सुंदरकांड समिति का वार्षिक उत्सव श्रद्धा एवं भक्ति के साथ संपन्न।

दुमदुमा, ३ जून: दुमदुमा सुंदरकांड समिति का २२वां एवं महिला सुंदरकांड समिति का २३वां वार्षिक उत्सव मंगलवार को दुमदुमा के मारवाडी पंचायती भवन में श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बडी संख्या में श्रद्धालुओं एवं समिति के सदस्यों ने भाग लिया।कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार एवं पूजा-अर्चना के साथ हुआ। यजमान दंपति छोटे लाल गोस्वामी रीता गोस्वामी द्वारा आचार्य पंडित चिरंजी लाल सुरोलिया के नेतृत्व में विधिवत पूजा संपन्न कराई गई। इसके पश्चात सामूहिक सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। सुंदरकांड पाठ का शुभारंभ समाजसेवी किशन लाल पारिक द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।सामूहिक सुंदरकांड पाठ के दौरान पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीराम एवं हनुमान जी के जयकारों के साथ धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया।इसके बाद तिनसुकिया सुंदरकांड समिति द्वारा भजनों की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। जिवंत क्षाकी में विभिन्न देव देवी प्रस्तुती को लोगो ने सरहना की।भजन संध्या में प्रस्तुत भक्तिमय गीतों ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया और वातावरण को पूरी तरह आध्यात्मिक रंग में रंग दिया।कार्यक्रम के समापन पर आयोजित अमृत भंडारे में बडी संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। समिति के पदाधिकारियों ने सभी श्रद्धालुओं, अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन का संकल्प व्यक्त किया।

दूसरी इंडस्ट्री में कैसे मिलेगी जॉब?

अगर आप बॉस या कंपनी से तंग आ चुके हैं, तो जॉब चेंज कर सकते हैं। हालांकि, अगर जॉब प्रोफाइल शानदार है और आपको यहां से आगे जाने का रास्ता नहीं सूझ रहा है, तब आप क्या करेंगे? यह नए सेक्टर में स्विच करने की वजह हो सकती है। अगर आपकी इंडस्ट्री (जिससे आप जुड़े हैं) खराब दौर से गुजर रही है, रेवेन्यू घट रहा है, लोगों की छंटनी हो रही है और एंप्लॉयी ग्रोथ की कोई गुंजाइश नहीं है, तो भी आप दूसरे सेक्टर में स्विच कर सकते हैं।

आप कहां जाएंगे?

टारगेट इंडस्ट्री की पहचान करना पहला कदम होगा। कुछ बातों के आधार पर आप संभावित इंडस्ट्री को शॉर्टलिस्ट कर सकते हैं। पहला, किस इंडस्ट्री ने आपकी इंडस्ट्री या मौजूदा फर्म से प्रफेशनल्स हायर किए हैं। दूसरा, किस इंडस्ट्रीज में उन की वर्ड्स का इस्तेमाल किया जाता है, जो आपके मौजूदा रोल या रिस्पॉन्सिबिलिटी से मेल खाता है। तीसरा, आपकी कंपनी के वेंडर्स दूसरी किस इंडस्ट्री के साथ कम करते हैं। चौथा, मेंटॉर और आपकी इंडस्ट्री के सीनियर प्रफेशनल्स आपको क्या सलाह देते हैं?

कहां मिलेगा पैसा?

एक या दो इंडस्ट्री को सेलेक्ट करने के बाद उन्हें समझने की कोशिश करें। इनके कस्टमर्स कौन हैं? रेवेन्यू कहां से आता है? एनवायरमेंट या मार्केट प्लेस में आए बदलाव का कितना असर इंडस्ट्री की कंपनियों पर पड़ेगा? इस इंडस्ट्री के डिफरेंट कॉम्पिटिटर्स एक-दूसरे से किस तरह से अलग हैं और पैसा कमाने में वे इसका कैसे इस्तेमाल करते हैं?

आप क्या बेच रहे हैं?

आप एक ब्रैंडवट हैं, जिसे बेचा जाना है। आप चाहते हैं कि आपका नया कस्टमर-यानी टारगेट इंडस्ट्री आपकी स्किल और काबिलियत देखे। इसके लिए आपको नए सेक्टर की जरूरतों को ध्यान में रखकर नए सिरे से रिज्यूमे बनाना होगा। ऐसा करते समय मौजूदा इंडस्ट्री से जुड़े की वर्ड्स और टर्म्स का इस्तेमाल न करें। आप जिस स्किल या अचीवमेंट को दिखाना चाहते हैं, उसे अलग स्टाइल में लिखें और ऐसे वाक्य का इस्तेमाल करें, जो असर डालने वाले हों।

क्या आप क्या जानते हैं?

अब इंडस्ट्री से जुड़े लोगों से कनेक्ट करें। ट्रेड शो, कॉन्फ्रेंस और प्रफेशनल्स नेटवर्किंग साइट्स एंड कम्यूनिटीज शुरुआत करने के लिए अच्छी जगहें हैं। जहां मुमकिन हो, अपने संपर्क से मिलें और वर्क प्रोफाइल को समझने की कोशिश करें।

कैसे बढ़ाए कदम?

बेहतर रिजल्ट के लिए अपने गोल की तरफ छोट-छोटे कदम बढ़ाएं। फैमिली और दोस्तों का सपोर्ट हासिल करने के लिए उन्हें यकीन दिलाएं। यह पक्का करें कि आपने एक ही ऑप्शन तक खुद को सीमित नहीं रखा है। मल्टिपल रोल के लिए अप्लाई करें।

मौकों से भरपूर करियर फिल्ड है

रेडियोग्राफी

किसी भी बीमारी के सफल इलाज के लिए पहले बीमारी की पहचान बेहद जरूरी है. बीमारी की पहचान सिर्फ रोगी के लक्षणों के आधार पर नहीं की जा सकती बल्कि इसके लिए कुछ खास किस्म के शारीरिक परीक्षण भी कराये जाते हैं. ज्यादातर परीक्षण शरीर के अंदरूनी हिस्सों के ही होते हैं. इस किस्म के परीक्षणों को रेडियोग्राफी कहा जाता है. रेडियोग्राफी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में करियर बनाकर मेडिकल सिस्टम का विशेष हिस्सा बना जा सकता है. रेडियोग्राफी के जरिये शरीर के अंदरूनी हिस्से की जांच की जाती है. इससे मालूम किया जा सकता है कि रोगी के किस हिस्से में कौन-सी बीमारी है. रेडियोग्राफी के अंतर्गत एक्स-रे, फ्लोरोस्कॉपी, अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन, मैग्नेटिक रेजोनेंस इमेजिंग, एंजियोग्राफी और पोसीट्रॉन इमिशन टोमोग्राफी जैसे टेस्ट आते हैं. रेडियोग्राफी के अंतर्गत शरीर के किसी भी हिस्से की थ्री डायमेंशनल इमेज बनायी जाती है. इस इमेज को देखकर ही डॉक्टर यह पता लगाते हैं कि परेशानी की वजह क्या है. शरीर के भीतर हो रहे बदलावों की सही स्थिति जानने के लिए रेडियो इमेजिंग तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है. इसे रेडियोग्राफी भी कहते हैं. इस तकनीक के जरिये न सिर्फ शरीर की अंदरूनी व्यवस्था का पता लगाया जाता है बल्कि कैंसर और ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारियों का इलाज भी किया जाता है. इन बीमारियों के इलाज के लिए रेडिएशन तकनीक रेडियोग्राफी के अंतर्गत आती है.

रेडियोग्राफी के क्षेत्र को मुख्यत- दो भागों में विभाजित किया गया है- पहला डायग्नोस्टिक रेडियोग्राफी और दूसरा थेराप्यूटिक रेडियो ग्राफी. डायग्नोस्टिक रेडियोग्राफी मरीज को परीक्षण की प्रक्रिया समझाता है. साथ ही, उसे परीक्षण के लिए तैयार भी करता है. मशीन को किस तरह ऑपरेट करना है, इसकी जिम्मेदारी भी डायग्नोस्टिक रेडियोग्राफर की होती है. तमाम उपकरणों और रिकॉर्ड के मेंटीनेंस की जिम्मेदारी भी डायग्नोस्टिक रेडियोग्राफर की होती है. यह फिजीशियन और सर्जन को असिस्ट करने का काम भी करता है.

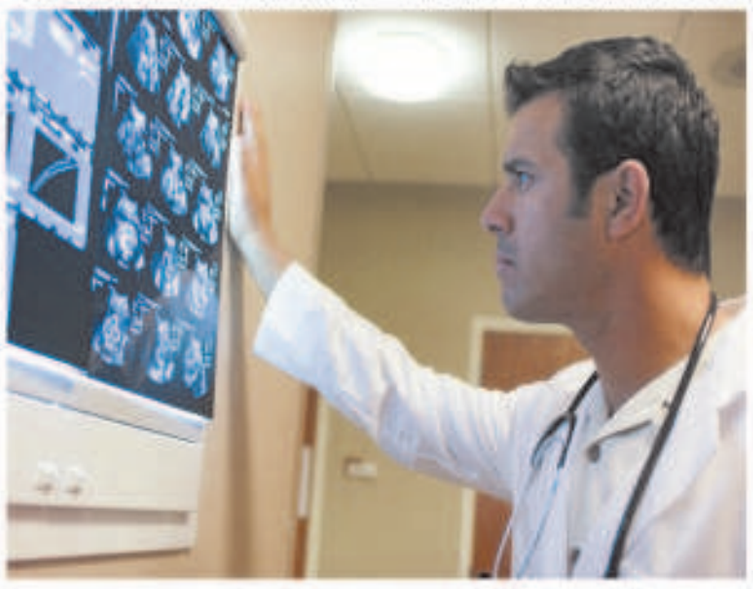

इसके विपरीत थे राप्यूटिक रेडियोग्राफी का इस्तेमाल बीमारियों के इलाज और कुछ जटिल बीमारियों को जड़ से खत्म करने में हो रहा है. ट्यूमर के इलाज में थेराप्यूटिक रेडियोग्राफी के अंतर्गत इस्तेमाल किया जाने वाला रेडिएशन बेहद नियंत्रित अवस्था में होता है. रेडिएशन की नियत मात्रा से ही ट्यूमर को छोटा किया जाता है. इस क्षेत्र में ऐसे कुशल लोगों की आवश्यकता रहती है, जो रेडियोग्राफी के अंतर्गत आने वाले रेडिएशन को न सिर्फ नियंत्रित कर सकें बल्कि उन्हें यह भी मालूम हो कि किस बीमारी के इलाज के लिए किस स्तर के रेडिएशन की जरूरत होती है. तकनीक के विकास के साथ रेडियोग्राफी का भी विकास होता जा रहा है.

इन दिनों रेडियोग्राफी के जितने भी उपकरण उपलब्ध हैं, वह पहले की तुलना में कहीं ज्यादा तकनीकी रूप से उन्नत हैं. आने वाले समय में इन उपकरणों की तकनीक में बड़े स्तर के फेरबदल होंगे, इस बात की पूरी संभावना है. ऐसे में, रेडियोग्राफी के क्षेत्र में करियर की असीम संभावनाएं उपलब्ध हैं. इस क्षेत्र में करियर बनाने वालों के लिए सबसे जरूरी यह है कि उनमें असीम धैर्य हो. तरह-तरह के मरीजों को इस बात का विश्वास दिलाना कि परीक्षण या इलाज के दौरान उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी और वह सुरक्षित मशीन से बाहर निकल आएंगे. एक सफल रेडियोग्राफर वही होता है, जो अपनी दिमागी क्षमता और मजबूत इच्छा शक्ति के बल पर मरीज को बिना किसी हिचक के परीक्षण के लिए तैयार कर ले. परीक्षण भले ही दर्दनाक क्यों न हो, लेकिन रेडियोग्राफर मरीज को इस तरह समझाये कि मरीज रेडियोग्राफर पर पूरी तरह भरोसा करने लगे. इसके अलावा, रेडियोग्राफर में नई तकनीक के प्रति दिलचस्पी भी होनी चाहिए.

योग्यता - इस क्षेत्र में करियर बनाने वालों को बायोलॉजी, फिजियोलॉजी में विशेष रुचि होनी चहिए. रेडियोग्राफी से जुड़े कोर्स स्नातक स्तर से शुरू होते हैं. रेडियो ग्राफी का एक साल का सर्टिफिकेट कोर्स भी उपलब्ध है. कुछ संस्थान डिप्लोमा इन डायग्नोस्टिक रेडियोग्राफी और रेडियोथैरेपी का कोर्स भी कराते हैं. यह कोर्स दो साल की अवधि का होता है. इसके अलावा, डिग्री कोर्स के रूप में बीएससी इन रेडियोग्राफी, बीएससी इन मेडिकल टेक्नोलॉजी इन रेडियोग्राफी में दाखिला लिया जा सकता है. तीन साल के स्नातक स्तर के कोर्स के लिए छात्र का 12वीं में 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण होना जरूरी है. 12वीं में मैथमैटिक्स, फिजिक्स और केमेस्ट्री विषय होने चाहिए.

संस्थान - ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली अपोलो इंस्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटल मैने जमेंट एंड अप्लाइड साइंसेज, चेन्नई असम मेडिकल कॉलेज, डिब्रूगढ़, असम बीजे मेडिकल कॉलेज, अहमदाबाद बीआरडी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर चेन्नई मेडिकल कॉलेज, चेन्नई क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर कॉलेज ऑफ एडवांस स्टडीज, चियलम, महाराष्ट्र दरभंगा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, दरभंगा, बिहार डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल, बीदर, कर्नाटक

कॉस्मेटिक सर्जन की तेजी से बढ़ रही मांग

आज के दौर में खूबसूरत दिखने के लिए लोग कॉस्मेटिक सर्जरी का सहारा लेने लगे हैं. यही वजह है कि कॉस्मेटिक सर्जन की मांग बढ़ रही है.

इन दिनों हर क्षेत्र में स्पेशलाइज्ड कैंडिडेट्स यानी विशेषज्ञता हासिल कर चुके लोगों की मांग है. इसलिए बेहतर होगा कि पूरी जांच-पड़ताल के बाद ही आप कॉस्मेटिक सर्जन के क्षेत्र को चुनें ताकि आगे बढ़ने के अवसर हमेशा मिलते रहें.

यदि आप मेडिकल के प्रोफेशन में आना चाहते हैं तो कॉस्मेटिक सर्जरी का क्षेत्र नए विकल्प के रूप में आपके लिए तैयार है. यदि रुचि हो तो आप इसमें बेहतर करियर बना सकते हैं.

बढ़ती मांग - अपने नैन-नक्श के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण आज देश की बड़ी आबादी कॉस्मेटिक सर्जरी का सहारा ले रही है. इंटरटेनमेंट इंडस्ट्री के अलावा, मध्यवर्गीय लोग भी खूबसूरत दिखने की चाहत में कॉस्मेटिक सर्जरी का सहारा लेने लगे हैं. यही वजह है कि आज इस क्षेत्र में भी अच्छी संभावनाएं देखी जा रही हैं. वास्तव में, कॉस्मेटिक सर्जरी करवाना आज स्टेटस सिंबल बन चुका है. भारत में मुंबई और गोवा ऐसे शहर हैं, जहां बड़ी तादाद में भारतीय व विदेशी, दोनों कॉस्मेटिक सर्जरी के लिए पहुंचते हैं. कॉस्मेटिक सर्जरी के क्षेत्र में दिल्ली भी पीछे नहीं है. अन्य हॉस्पिटल उद्योग की तरह यह क्षेत्र भी अब सेवा उद्योग बन चुका है. विशेषज्ञों की मानें तो कॉस्मेटिक सर्जरी का बाजार आज 30 से 40 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ रहा है, जबकि आज महज दो हजार से भी कम कॉस्मेटिक सर्जन हैं.

राहत भरा प्रोफेशन - विशेषज्ञों के मुताबिक, आमतौर पर जिस प्रोफेशन में अच्छा पैसा होता है, उसमें भागदौड़ बहुत ज्यादा होती है, लेकिन इस प्रोफेशन में ऐसी बातें नहीं हैं. एक कॉस्मेटिक सर्जन कुछ महीनों की प्रैक्टिस के बाद एक से सवा लाख रुपये प्रतिमाह तक कमा सकता है. प्राइवेट प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टरों की कमाई का तो अंदाजा लगा पाना भी मुश्किल.

पहला पायदान है एमबीबीएस - कॉस्मेटिक सर्जन बनने की पहली सीढ़ी है एमबीबीएस का कोर्स. इसके बाद आपको मास्टर ऑफ सर्जरी या एमएस की डिग्री लेनी होगी. फिर प्लास्टिक सर्जरी में तीन साल एमसीएच या डीएनबी का कोर्स करना होगा. अब आप कॉस्मेटिक सर्जरी में स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं. गौरतलब है कि कॉस्मेटिक सर्जरी की स्पेशल ट्रेनिंग के लिए कॉस्मेटिक सर्जरी फेलोशिप हासिल करनी होती है. ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, स्पेन, बेल्जियम, ब्रिटेन, कनाडा, ब्राजील, मैक्सिको और वेनेजुएला जैसे देशों से यह फेलोशिप पूरी की जा सकती है. सामान्य डॉक्टरी पेशे की तरह इमरजेंसी कॉल्स व रात में हॉस्पिटल के चक्कर लगाने की समस्या से भी कॉस्मेटिक सर्जन मुक्त होते हैं. कुल मिलाकर, यह काफी राहत भरा प्रोफेशन है.

शिक्षण संस्थान - कॉस्मेटिक सर्जन की पढ़ाई के लिए अच्छे इंस्टीट्यूट में ही दाखिला लेना चाहिए. इस क्रम में दिल्ली के मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज और सफदरजंग हॉस्पिटल, मुंबई स्थित ग्रांट मेडिकल कॉलेज और नायर मेडिकल कॉलेज सहित एसएमएस हैदराबाद व स्टैनले मेडिकल कॉलेज, चेन्नई जैसे कुछ नाम शामिल हैं.

नए युग का आगाज - कॉस्मेटिक सर्जरी में लेजर, स्लिम लिपो जैसी नई तकनीक व उपकरणों का प्रयोग होने के कारण नए युग का आरंभ हुआ है. ऐसे मॉडर्न तकनीकों और उपकरणों की सहायता से कॉस्मेटिक सर्जन अपने क्लाइंट्स की हर छोटी-बड़ी ख्वाहिश आसानी से पूरी कर रहे हैं. चूंकि इसके तहत एक नियत समय में शरीर के किसी खास हिस्से की मरम्मत या उसका रूपांतरण किया जाता है, इसलिए एक बड़े हिस्से में इसका स्कोप देखा जा सकता है. लिपोसक्शन, हेयर ट्रांसप्लांट, बोटोक्स, पेट की चर्बी घटाने जैसी प्रक्रियाएं कॉस्मेटिक सर्जरी के दायरे में आती हैं. अपने बेहतर लुक के लिए या खुद को जवां दिखाने के लिए अकसर फिल्मी सितारों के कॉस्मेटिक सर्जरी कराने या फिर बोटोक्स जैसी तकनीक अपनाने की बातें सुनने में आती हैं. अपने होंठों को खूबसूरत दिखाने के लिए उनकी सर्जरी करा चुकी अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा को इसमें कोई बुराई नजर नहीं आती. वह कहती हैं कि बॉलीवुड में टॉप पर बने रहने के लिए बेहतर और खूबसूरत दिखना बेहद जरूरी है. मेरे प्रशंसक मुझे हमेशा अच्छा देखना चाहते हैं. उनकी उम्मीदों का मुझ पर भारी दबाव रहता है. ऐसे में, यदि मुझे कॉस्मेटिक सर्जरी करानी भी पड़ती है तो इसमें बुरा क्या है? अगर किसी को लगता है कि कॉस्मेटिक सर्जरी कराने से वह और बेहतर दिख सकता है और उसके आत्मविश्वास में इजाफा हो सकता है तो सर्जरी कराने में मुझे तो कोई बुराई नजर नहीं आती.

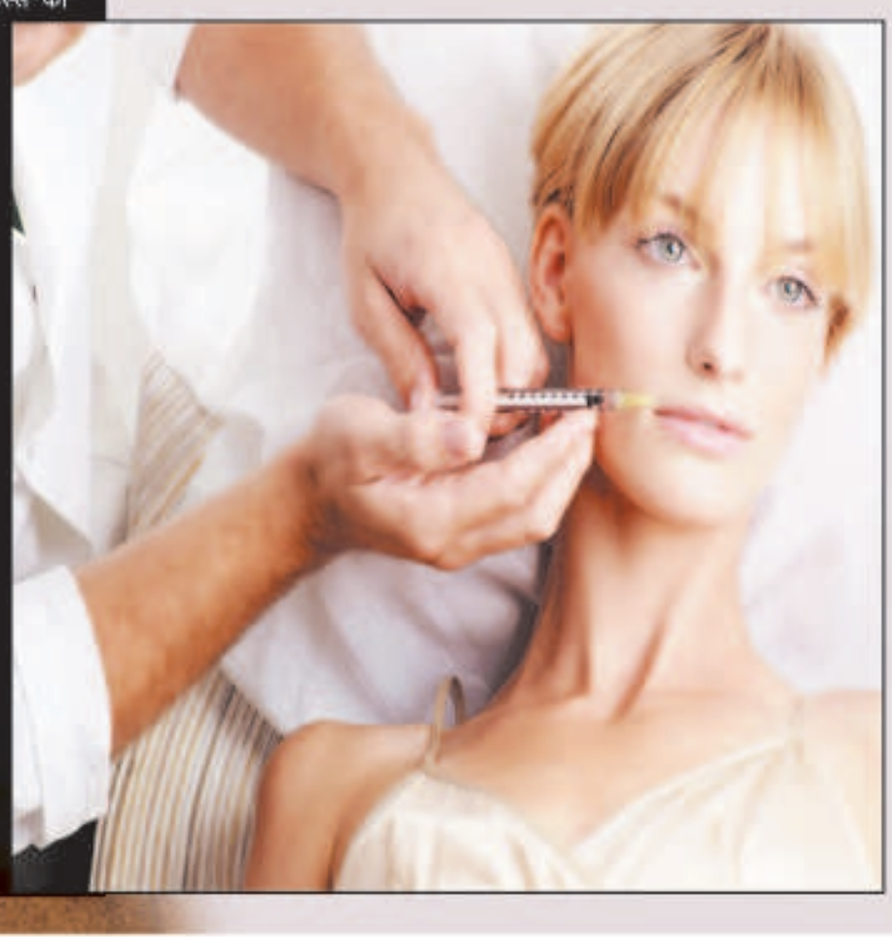

फॉरेन लैंग्वेज सीखिए

और बनाइए अपना बेहतरीन कैरियर

फॉरेन लैंग्वेज के जानकार युवाओं के लिए बहुत से करियर ऑप्शंस रहते हैं. आज के युवा खुद को अपडेट करने के लिए अंग्रेजी के साथ फॉरेन लैंग्वेज भी सीख रहे हैं. इन भाषाओं के सर्टिफिकेट कोर्सेस किए जा सकते हैं. जर्मनी, स्पेनिश और चायनीज सभी विदेशी लैंग्वेज में करियर के अवसर हैं, लेकिन वर्तमान में युवाओं में फ्रेंच भाषा के प्रति ज्यादा लगाव है. करियर काउंसलर्स के मुताबिक विदेशी भाषाओं में करियर की इस समय कई राहें हैं. विदेशी भाषाओं में फ्रेंच भाषा अत्यधिक महत्व रखती है क्योंकि दुनिया में अंग्रेजी के बाद जिस योरपियन भाषा का सबसे ज्यादा महत्व है वह फ्रेंच ही है. फ्रेंच भाषा में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, डिग्री के बाद करियर की असीम संभावनाएं बनती हैं. वैश्वीकरण के कारण फ्रेंच भाषा के पाठ्यक्रमों का महत्व तेजी से बढ़ा है. विदेशी दूतावास, कॉर्पोरेट सेक्टर, फ्रांस की कंपनियां अनुवादक, सरकारी विभागों में फ्रेंच भाषा के जानकार, मीडिया क्षेत्र में आदि में फ्रेंच भाषा में बेहतर करियर के कई उजले अवसर हैं. युवा प्रामाणिक तौर पर भाषा की जानकारी से मल्टीनेशनल कंपनियों में अच्छे पदों पर काम कर सकते हैं.

शैक्षणिक योग्यता- 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद युवा सर्टिफिकेट कोर्सेस से विदेशी भाषाओं को सीख सकते हैं. किए जा सकते हैं डिग्री और डिप्लोमा कोर्स- फ्रेंच भाषा के तीन माह में होने वाले सर्टिफिकेट कोर्स के बाद डिप्लोमा और डिग्री कोर्सेस भी किए जा सकते हैं.

इन संस्थानों से आप डिग्री या डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, कोलकाता, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, बैंगलोर विश्वविद्यालय, बैंगलुरू.

करियर काउंसलर्स के मुताबिक विदेशी भाषाओं में करियर की इस समय कई राहें हैं. विदेशी भाषाओं में फ्रेंच भाषा अत्यधिक महत्व रखती है क्योंकि दुनिया में अंग्रेजी के बाद जिस योरपियन भाषा का सबसे ज्यादा महत्व है वह फ्रेंच ही है.

मानव जीवन का सबसे बड़े यज्ञ कौन सा हैं ?

जिसके पास धन होता है उसी को मित्र मिलते हैं, भाई बन्धु उसके अपने हैं। कुल, शील, पाण्डित्य, रूप, भोग, यश और सुख ये सब धनवान को ही प्राप्त होते हैं। जो जन्म से दरिद्र है वह धर्म का अनुष्ठान कैसे कर सकता है। स्वर्ग प्राप्ति में उपकारक जो सात्विक यज्ञकार्य तथा पोखरे खुदवाना आदि कार्य है, वे भी धन के अभाव में नहीं हो सकते।

धन संसार बंधन में डालने वाला एक जाल है। उसमें जो मनुष्य एक बार फंस गया फिर उसका उद्धार नहीं हो सकता। इस लोक और परलोक में धन के बहुत सारे दोष हैं। धन रहने पर चोर, बंधु बान्धव आदि से भय प्राप्त होता है। सह मनुष्य उस धन को हड़प लेने की अभिलाषा रखते हैं। विचार करने योग्य तथ्य है धन कैसे सुखद हो सकता है धन प्रोणों का घातक और पाप को साधक है। धनी व्यक्ति का घर काल एवं कामादि दोषों का निकेतन बन जाता है। अत धन दुर्गति का प्रधान कारण है।

जिसके पास धन होता है उसी को मित्र मिलते हैं, भाई बन्धु उसके अपने हैं। कुल, शील, पाण्डित्य, रूप, भोग, यश और सुख ये सब धनवान को ही प्राप्त होते हैं। धनहीन मनुष्य को उसके स्त्री पुत्र भी त्याग देते हैं। फिर उसे मित्रों की प्राप्ति कैसे हो सकती है। जो जन्म से दरिद्र है वह धर्म का अनुष्ठान कैसे कर सकता है। स्वर्ग प्राप्ति में उपकारक जो सात्विक यज्ञकार्य तथा पोखरे खुदवाना आदि कार्य है, वे भी धन के अभाव में नहीं हो सकते। दान संसार के लिए स्वर्ग की सिढ़ी है।

किंतु निर्धन व्यक्ति के द्वारा उसकी भी सिद्धी होनी असंभव है। व्रत आदि का पालन धर्मोपदेश आदि का श्रवण, पितृ यज्ञ आदि का अनुष्ठान तथा तीर्थ सेवन आदि कार्य धनहीन मनुष्य के लिए नहीं हो सकते। रोगों का निवारण, पथ्य का सेवन, औषधों का संग्रह, अपने शरीर की रक्षा तथा शत्रुओं पर विजय आदि कार्य भी धन से ही सिद्ध होते हैं इसलिए जिसके पास धन हो उसी को इच्छानुसार भोग प्राप्त हो सकते हैं। धन रहने से ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। कामनाओं का त्याग करने से ही समस्त व्रतों का पालन हो जाता है। क्रोध छोड़ देने से तीर्थों का सेवन हो जाता है। दया ही जप के समान है, संतोष ही शुद्ध धन है, अहिंसा ही सबसे बड़ी सिद्धि है। शीलता से कमाना ही उत्तम जीविका है, साग का भोजन ही अमृत समान है, उपवास ही उत्तम तपस्या है, संतोष ही बहुत बड़ा भोग है, कौड़ी का दान ही महादान है, परायी स्त्री माता और पराया धन मिट्टी के ढेले के समान है। परस्त्री सर्पिणी के समान भयंकर है। यही सबसे बड़े यज्ञ है। कीचड़ लगाकर धोने की अपेक्षा दूर से उसका स्पर्श न करना ही अच्छा है।

सब पर दया करने वाले भगवान ऋषभदेव

महाभागवत राजर्षि प्रियव्रत के वंश में नाभि नाम के एक परम प्रतापी तथा धार्मिक राजा हुए। उनका विवाह मेरु की पुत्री मेरुदेवी के साथ हुआ। बहुत दिनों तक उनके कोई संतान नहीं हुई। उन्होंने पुत्र कामना से अपनी पत्नी के साथ श्रद्धा भक्ति से भगवान यज्ञ पुरुष का पूजन किया। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवान उनके सामने प्रकट हुए। भगवान का दर्शन प्राप्त करके ऋत्विजों सहित महाराज नाभि ने उनकी स्तुति की। ऋत्विज बोले- प्रभो! राजर्षि नाभि आप ही जैसे पुत्र कामना से आपकी प्रसन्नता के लिए यज्ञ कर रहे हैं। अत: आपको इनकी कामना पूर्ण करनी चाहिए। भगवान बोले- ऋषियों! मेरे समान दूसरा कोई हो नहीं सकता। अत: आप लोगों की बात रखने के लिये मैं स्वयं ही मेरुदेवी के माध्यम से अपने अंश रूप में अवतार ग्रहण करूंगा। यह कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गये। समय आने पर महाराज नाभि के यहां एक दिव्य बालक का जन्म हुआ। उसके चरणों में वज्र, अंकुश आदि के चिन्ह प्रकट होते ही दिखायी देने लगे। बालक के अनुपम सौन्दर्य को जो भी देखता वही मोहित हो जाता था। बालक के जन्म के साथ ही महाराज नाभि के राज्य में संपूर्ण ऐश्वर्य उपस्थित हो गये। पिता ने उस अनुपम बालक का नाम ऋषभ रखा। महाराज नाभि के राज्य में अतुल ऐश्वर्य को देखकर इंद्र को बड़ी ईर्षा हुई। उन्होंने इनके राज्य में वर्षा बंद कर दी। भगवान ऋषभदेव ने अपनी योगमाया के प्रभाव से इंद्र के प्रयत्न को निष्फल कर दिया और इंद्र ने उनसे अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी। भगवान ऋषभदेव को विद्याध्ययन के लिये गुरुगृह भेजा गया और ये थोड़े ही काल में सभी विद्याओं में पारंगत होकर घर लौट आये। इनका विवाह इंद्र की कन्या जयन्ती से हुआ। पुत्र को हर प्रकार से योग्य जानकर महाराज नाभि भगवान ऋषभदेव को राज्य सिंहासन पर बैठाकर तपस्या के लिए बदरिकाश्रम चले गये। जयन्ती के द्वारा भगवान ऋषभदेव के सौ पुत्र हुए। उनमें सबसे बड़े पुत्र का नाम भरत था। उसी के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ। भगवान ऋषभदेव साक्षात अपने स्वरूपानुभव में निमग्न होने के कारण रागादि दोषों से रहित, प्राणिमात्र के हित में तत्पर तथा स्वभाव से सबके ऊपर दया करने वाले थे। यद्यपि वे स्वयं धर्म के रहस्य के ज्ञाता थे, तथापि लोक संग्रह के लिए ब्राम्हणों के आदेशानुसार उनसे पूछकर शास्त्रोक्त कर्मों का संपादन करते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में सौ अश्वमेध यज्ञ किये। उनके राज्य में सभी लोग फल की आशा त्यागकर केवल भगवान की प्रसन्नता के लिये ही कर्म करते थे। भगवान ऋषभदेव ने समस्त प्रजा के सामने अपने पुत्रों को मोक्ष धर्म का अति सुंदर उपदेश दिया और कहा- तुम लोग निष्कपट बुद्धि से अपने बड़े भाई भरत की सेवा करो। इससे मेरी ही सेवा होगी। तदनन्तर भगवान ऋषभदेव अपने बड़े पुत्र भरत को राज्यभार सौंपकर दिगम्बर वेष में वन को चले गये और संसार को परमहंसों के आचरण की शिक्षा देते हुए उन्होंने कालान्तर में अपने शरीर को दावाग्नि में भस्म करके अपनी लौकिक लीला का संवरण किया। यही भगवान ऋषभदेव जैनियों के आदि तीर्थंकर भी माने जाते हैं।

बैकुण्ठ धाम में छुपे सुख-समृद्धि का क्या है रहस्य

बैकुण्ठ धाम जगतपालक भगवान विष्णु की दुनिया है। वैसे ही, जैसे कैलाश पर महादेव व ब्रह्मलोक में ब्रह्मदेव बसते हैं। भगवान विष्णु का धाम बैकुण्ठ बड़ा ही दिव्य है। बैकुण्ठ धाम चेतन है, स्वयं प्रकाशमान है। इसके कई नाम हैं - साकेत, गोलोक, परमधाम, परमस्थान, परमपद, परमव्योम, सनातन आकाश, शाश्वत-पद, ब्रह्मपुर। धार्मिक मान्यता है कि पृथ्वी लोक का सबसे बड़ा सुख बैकुण्ठ का सबसे छोटा सुख है। इससे हम सोच सकते हैं कि बैकुण्ठ का सबसे बड़ा सुख कैसा होगा। इस तरह बैकुण्ठ परम सुख का धाम है। हिंदू धर्म पंचांग के मुताबिक कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी बैकुण्ठ चतुर्दशी कहलाती है। माना जाता है कि इस दिन व्रत करने मात्र से भी बैकुण्ठ लोक मिलता है।

अध्यात्म की नजर से बैकुण्ठ धाम मन की अवस्था है। बैकुण्ठ कोई स्थान न होकर आध्यात्मिक अनुभूति का धरातल है। जिसे बैकुण्ठ धाम जाना हो, उसके लिए ज्ञान ही उम्मीद की किरण है। इससे वह ईश्वर के स्वरूप से एकाकार हो जाता है। लेकिन जिसके भीतर परम ज्ञान है, भगवान के प्रति अनन्य भक्ति है, वे ही बैकुण्ठ पहुंच सकते हैं। वहीं मानवीय जिंदगी के लिए बैकुण्ठ की सार्थकता ढूंढे तो बैकुण्ठ का शाब्दिक अर्थ है - जहां कुंठा न हो। कुंठा यानी निष्क्रियता, अकर्मण्यता, निराशा, हताशा, आलस्य और दरिद्रता। इसका मतलब यह हुआ कि बैकुण्ठ धाम ऐसा स्थान है जहां कर्महीनता नहीं है, निष्क्रियता नहीं है। व्यावहारिक जीवन में भी जिस स्थान पर निष्क्रियता नहीं होती उस स्थान पर रौनक होती है।

वह जगह खुशियों से रोशन रहती है। चाहे वह परिवार, समाज हो या राष्ट्र। इस तरह बैकुण्ठ का रहस्य यही है कि अगर व्यक्ति मन से एकाग्र होकर अच्छे कर्म करता हुआ जीवन गुजारे तो उसे जिंदगी में सुख, शांति, सुकून, खुशियों, दौलत व समृद्धि के रूप में बैकुण्ठ मिलता है। इस तरह यह साफ है कि बैकुण्ठ की राह हर व्यक्ति के सामने होती है इसलिए वहां तक जानें और रहने का फैसला भी हर व्यक्ति को स्वयं ही करना होता है।

साधु को क्या रक्षा की जरूरत हो सकती है?

भगवान कृष्ण का प्रसिद्ध वक्तव्य है 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम' वह क्या अर्थ रखता है?

कहते हैं, साधुओं की रक्षा के लिए और दुष्टों के अंत के लिए मैं आऊंगा। ठीक है। दोनों का एक ही मतलब है। दुष्ट का अंत कब होता है, यह थोड़ा समझने जैसा है। दुष्ट का अंत कब होता है? मार डालने से?

मार डालने से दुष्ट का अंत नहीं होता क्योंकि कृष्ण भली-भांति जानते हैं कि मारने से कुछ मरता नहीं। दुष्ट का अंत तभी होता है जब उसे साधु बनाया जा सके, और कोई उपाय नहीं। मारने से सिर्फ दुष्ट का शरीर बदल जाएगा और कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। दुष्ट का अंत एक ही स्थिति में होता है, जब वह साधु हो जाए और बड़े मजे की बात उन्होंने साधुओं की रक्षा के लिए कही।

साधुओं की रक्षा की जरूरत तभी पड़ती है जब वे दिखावटी साधु रह जाएं अन्यथा जरूरत नहीं पड़ती। फिर साधु की रक्षा की क्या जरूरत होगी? साधु को भी रक्षा की जरूरत पड़ेगी तो फिर तो बहुत मुश्किल हो जाएगा। साधुओं की रक्षा के लिए आऊंगा, इसका मतलब है जिस दिन साधु झूठे साधु होंगे, असाधु होंगे, उस दिन मैं आऊंगा। सिर्फ असाधु के लिए ही रक्षा की जरूरत पड़ सकती है, अन्यथा साधु को क्या रक्षा की जरूरत हो सकती है?

पूजा पाठ करना आवश्यक है क्योंकि...

आधुनिक युग में बहुत से लोगों को आज के प्रमाद लिप्त वातावरण में पूजा-पाठ की बात करना अरण्य-रोदन लगता है। बेशक आपके हृदय मे भगवान के प्रति कितनी भी प्रेम, श्रद्धा, आस्था या विश्वास हो किन्तु पूजा पाठ करना आवश्यक है क्योंकि यद्यपि चावल, दाल एवं सब्जियों मे पानी पड़ता है किन्तु फिर भी भोजन के उपरांत या बीच में पानी पीना ही पड़ता है। आप ऐसा तो नहीं सोचते कि सब्जी या चावलों में ही बहुत सारा पानी उड़ेल दें ताकि बाद मे पानी पीने की आवश्यकता ही न पड़े? कोई बीज धूल मे पड़ा रहता है लेकिन जब बरसात या जल की नमी पाता है तभी अंकुरित होता है। इसी तरह हमारे सभी बीज रूपी लोक हितकारी एवं शुभ कर्म निरर्थक नहीं होते। वे सुरक्षित ही रहते हैं तथा पूजा, उपासना या ध्यान रूपी पवित्र कार्य की बूंदों के संपर्क में आते ही अंकुरित होने लगते हैं। किन्तु जैसे समस्त द्रव पदार्थ जल नहीं होते अम्ल या तेजाब भी द्रव रूप में ही होते हैं। जो बीजों को जला देते हैं अत: ये देखना अति आवश्यक होता है कि उपासना का विधान विपरीतार्थक तो नहीं है। पूजा की अनेक सर्वोत्तम, सर्वसुलभ एवं सरल विधियां शास्त्रों में उपलब्ध हैं। इनमें से जो भी सहज प्रतीत हो उसे चुनें। जिनके पास समय कम है अथवा कर्मकांडों मे मन नहीं रमता तो उपासना की, ध्यान की, पूजा की इस सबसे सरल विधि का अनुपालन करें। पूजा घर को परिवार के सभी सदस्यों की शरण स्थली बनाएं, एक जगह जहां शांति और सूकून हो जहां वे भगवान से जुड़ सकें एवं अपनी प्रार्थना और व्यावहारिक जरूरतों को समर्पित कर सकें। एक आम व्यक्ति द्वारा की गई पूजा आत्मार्थ पूजा कहलाती है एवं उसे एक व्यक्तिगत पूजा अनुष्ठान माना जाता है जबकि जनमानस हेतु पुजारी द्वारा मंदिर में की गई पूजा परार्थ पूजा कहलाती है। आत्मार्थ पूजा करने के बाद प्रथानुसार कुछ मिनट ध्यान में बैठना चाहिए। आंतरिक पूजा करनी चाहिए ताकि आत्मा तक परिष्कृत भावनाओं और प्राण उर्जा को ले जाया जा सके। जिन्हें पूजा ने उत्पन्न किया और जो कमरे में अभी तक हैं। इस प्रकार से हम पूजा से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गीता अमृत

।। अथ त्रयोदशोऽध्यायः।।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्।। 34।।

बहुत से लोग सांख्य-माध्यम से ध्यान करते हैं, तो शेष निष्काम कर्मयोग, समर्पण के साथ उसकी प्राप्ति के लिए उसी निर्धारित कर्म आराधना का आचरण करते हैं। जो उसकी विधि नहीं जानते, वे तत्वस्थित महापुरुष के द्वारा सुनकर आचरण करते हैं। क्रमशः

युगन्धर (श्री कृष्ण)

यहाँ तक कि अमात्य विपृथु की इस बात का भी भान नहीं रहा कि वे प्रथा के अनुसार, द्वारिकावासियों को कुछ सन्देश के लिए स्वामी से प्रार्थना करें। वे स्वामी की ओर केवल देखते ही रह गए।

दूर मानसरोवर पर, ठीक सूर्योदय के क्षण जिस प्रकार ब्रह्मकमल की कली खिल उठती है, उसी प्रकार किसी के निवेदन किए बिना ही, हमारे स्वामी आसन से उठ खड़े हुए। इस समय वे बहुत ही कम बोले, परन्तु जो कुछ बोले, वह अविस्मरणीय था।

हाथ जोड़कर उन्होंने सबको प्रणाम किया। और मुक्त मन की प्रासादिक प्रसन्नता उनकी मन्द मुस्कान में खिल उठी, उनके निर्मल गुलाबी होठों के पीछे छिपे हुए कुन्दकलिका जैसे दाँत क्षण-भर चमक उठे। बड़े-बड़ों को जिसमें जीवन का आधार ढूंढने की इच्छा हो, ऐसा उनके कपोलों पर खिलने वाला भँवर क्षण-भर खिलकर फिर विलीन हो गया। उनके नील पद्म जैसे सुन्दरवाणी मुखमण्डल पर कभी-कभार ही दिखने वाली सुनहरी हास्य-छटा बिखर गयी। अपनी मधुर वेणुवाणी में उन्होंने कहा, द्वारिका के मेरे प्रिय बन्धु-भगिनी। केवल इस सम्बोधन से ही अभिभूत हुए सुधर्मा तालियाँ पीटते रहे। पश्चिम सागर के ज्वार की भाँति प्रत्येक के मन में दो बातों का असीम आनन्द लहरा रहा था-एक था द्वारिकाधीश के लौट आने का और दूसरा था, उनके सभी नर-नारियों को प्रिय बन्धु-भगिनी सम्बोधित करने का।

क्रमशः

श्री शिवाजी सावंत के विख्यात उपन्यास से साभार।

खबरें जरा हटके

कूड़े के ढेर में रहता है ये परिवार

फ्रांस के एक फोटोग्राफर ने जकार्ता में रहने वाले कुछ खास लोगों की जिंदगी को तस्वीरों के जरिए दर्शाया है। ये अमूक तस्वीरें हैं जो खामोश रहते हुए भी बहुत कुछ कहती हैं। फोटोग्राफर एलेक्जेंडर ने कुछ तस्वीरों के जरिए इंडोनेशिया के एक कूड़े के ढेर में रहने वाले एक परिवार की दर्दभरी कहानी को सबके सामने रखा है। उन्होंने फोटोज के जरिए उन लोगों की परेशानियों को शेयर किया है। दरअसल ये तस्वीरें जकार्ता से करीब 12 मील दूर स्थित ह्वाआईलैंड ऑफ जावाह्न की हैं जहां एक बहुत बड़े कूड़े के ढेर में करीब 3000 से ज्यादा लोग बसे हुए हैं। इन तस्वीरों के देखने के बाद आप भी उनके दर्द का बड़ा हिस्सा बन जाएंगे। इस गंदी जगह पर ये लोग अपनी झुग्गी डाल कर कई सालों से रह रहे हैं। इनमें से तो कई लोग पैदा ही इस कूड़े के ढेर में हुए हैं। इनका कोई घर नहीं है, कूड़े और दलदल के बीच में रहना ही इनकी जिंदगी बन गई है।

दुनिया का अनोखा बॉर्डर, यहां वॉलीबाल खेलने आते है लोग

भारत की सीमा कई देशों से जुड़ी है। जहां पाकिस्तान और भारत के बॉर्डर पर हमेशा फौज दिखाई देती है, वहीं दुनियाभर में कुछ ऐसे देश भी है, जहां के बॉर्डर पर न कोई फौज दिखाई देती है और न ही कोई सुरक्षा का इंतजाम है। इसके बावजूद भी इन देशों में इतनी शांति और सुकून से लोग अपनी जिंदगी बिता रहे हैं। ये बॉर्डर है अमेरिका और मेक्सिको के बीच जिसे दुनिया का सबसे सुरक्षित बॉर्डर माना जाता है। दरअसल, दोनों देशों के बीच आज तक सीमा को लेकर कोई विवाद सामने नहीं आया, जिसकी वजह से इस बॉर्डर पर सुरक्षा का कोई इंतजाम भी नहीं है।

न्यूज रील

बजरंगी के बाद इस फिल्म के लिए लक्ष्मण बने सलमान खान

बजरंगी के बाद इस फिल्म के लिए लक्ष्मण बने सलमान ख सलमान खान को आपने देखा बजरंगी के रूप में अब देखिएगा लक्ष के रूप में! सिल्वर स्क्रीन सलमान एक के बाद एक अपना जल दिखाते जा रहे हैं, पहले बजरंगी बन कर और अब लक्ष्मण बन क आपको बता दें कि अपनी आने वाली फिल्म में सलमान के किरदार नाम होगा लक्ष्मण। हम बता कर रहे हैं इस साल की मोस्ट अवे फिल्म ट्यूबलाइट की। सलमान खान की ट्यूबलाइट धीरे-धीरे ज रही है और यह पूरी तरह जल जाएगी जब इसका टीजर रिलीज हो तीन दिन बाद। और सलमान इसकी तैयारी पूरी तरह कर रहे हैं, इस फिल्म से जुड़ा एक पोस्टर रिलीज करते हुए सलमान फैन्स इसके लिए और ज्यादा एक्साइट कर रहे हैं। क्यूंकि अब ट्यूबलाइट टीजर को तीन ही दिन बाकी है, सलमान ने शेयर किया है इसका और पोस्टर जिसमें वो फिल्म में अहम भूमिका निभा रहे मेटिन रे भी दिखाई दे रहे हैं। इस छोटे और क्यूट बच्चे के साथ पहले सलमान में अपनी तस्वीर शेयर की थी जो की वायरल हो गई सलमान ने यह पोस्टर शेयर करते हुए ट्वीट किया और लिखा, ह्वा फिल्म के डायरेक्टर कबीर खान ने यह पोस्टर शेयर किया और रिवि किया इस फिल्म सलमान का नाम - लक्ष्मण !ट्यूबलाइट इस साल पर रिलीज होगी जिसमें सलमान के साथ चायनीज एक्ट्रेस जु जु दिखाई देंगी और शाह रुख खान भी इस फिल्म में केमियो कर रहे है

अपना ब्लॉग

जलन बुरी नहीं, जलना बुरा है

कोमिका माथुर

मैं कॉलेज में थी, पीजी डिप्लोमा कर रही थी। क्लास में एक लड़की पढ़ाई के मामले हम सबसे कहीं तेज और मेधावी थी। लेकिन यही कोई दो-तीन महीने बाद धीरे-धीरे वह सबसे कटने लगी। इतना कि अपनी बहुत अच्छी दोस्त तक से उसने बात करनी बंद कर दी। उस दोस्त से जो भी बात करता, उससे भी वह बात करना बंद कर देती थी। इस दौरान उसकी ऐकडेमिक परफॉर्मेंस भी काफी गिर गई। कई-कई दिन तक क्लास में नहीं आती थी,आती तो चुपचाप एक कोने में बैठी रहती। बात करो तो चिड़चिड़ाने लगती। वो जितना पीछे जा रही थी, उसकी दोस्त उतनी ही आगे बढ़ रही थी। पढ़ाई में भी, टीचर्स और स्टूडेंट्स के बीच लोकप्रियता में भी।

कुछ था जो भीतर ही भीतर उसे खा रहा था। जानते हैं क्या ? जलनज। हां, वो जलन ही थी। वहक्लास में सबसे अच्छी थी लेकिन स्मार्ट और बातचीत में तेज होने की वजह से अटेंशन उसकी दोस्त को मिलता था। यही बात अंदर ही अंदर उसे खाती रहती थी। बाद में उसे खुद भी अहसास हुआ, पर तब तक देर हो चुकी थी।

जलन असल में उस चोर की तरह है जो चुपके से, बिन बताए मन में घुस जाती है और भीतर कुंडी लगाकर बैठ जाती है। आप बेशक बाहर कितना ही पहरा लगा कर बैठे हों, एक बार इस चोर के मन में घुस जाने के बाद आप कुछ नहीं कर सकते। वह आपको अंदर से खोखला कर देता है। जलन वो जज्बात है जो किसी पैकेज डील की तरह हमें मिलता है और इसके साथ आते हैं डर, दुख, गुस्सा जैसे तमाम दूसरे जज्बात। व्यक्तित्व को बनाने-बिगाड़ने में इनका बड़ा हाथ होता है। कभी कोई जज्बात हम पर हावी होता है तो कभी कोई। इनकी लगाम अपने हाथ में रखना जरूरी होता है। जलन भी ऐसा ही जज्बात है जिसकी चौकीदारी करते रहना जरूरी है। चौकीदारी नहीं की तो यह सबसे ज्यादा नुकसान जलने वाले का ही करती है।

जलन बुरी नहीं, बशर्ते आप इसे दुश्मन के बजाय दोस्त बना लें। यह आपके लिए एक आईने की तरह होती है। देखना चाहें तो यह हमें हमारा वह भीतरी चेहरा दिखा सकती है जो अक्सर हम देख नहीं पाते। यह हमें बता सकती है कि कौन सी चीजें, रिश्ते या बातें कद्र करने लायक हैं लेकिन यह संकेत तभी मिल पाता है जब आप चौकन्ने हों, अपने जज्बात पढ़ना जानते हों, अपने स्याह पक्ष को देख आंखें न मूंद लेते हों। तब आप डिप्रेस होकर उनसे दूर नहीं ज उनके करीब रहने की, उन्हें पाने की कोशिश में जुट जाते हैं। मसल वो लड़की शायद जलने के बजाय अपनी पर्सनैलिटी और कम्यूनिके स्किल को निखारने की कोशिश कर सकती थी। जलन के स असली मुश्किल इसमें नहीं कि आप उसे कैसे महसूस करते मुश्किल इसमें है कि आप उसके बाद कैसे रीऐक्ट करते हैं।

जलन को कमजोरी बनाने के बजाय उसे ताकत बना लें तो व रिश्तों की उम्र लंबी हो सकती है, कुछ उपलब्धियां समय पर मि सकती हैं। जज्बात कोई भी हो, वह तब तक अच्छा बुरा नहीं हो जब तक अनियंत्रित न हो। तो जज्बात को अच्छा बुरा समझ छोड़िए, उन्हें गले लगाइए, जलने का हौसला रखिए। सीखिए, व जल मत जाइए।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। शुभांक-3-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर करेंगे। शुभांक-2-5-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधनों में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-2-5-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास सफल होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। आलस्य का त्याग करें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। शुभांक-1-4-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शुभांक-2-6-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह होगा। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। शुभांक-3-5-8

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि व अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। आगे से रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिलेगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। शुभांक-3-5-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): समाज में मान-सम्मान मिलेगा। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार होगा। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-1-3-5

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें। संतान की उन्नति के योग हैं। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रही अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। शुभांक-1-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): सुख-आनंददायी समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य के लिए समय अच्छा रहेगा। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-1-3-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम होगा। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9

हंसी के फूव्वारें

एक कवि की कविताएं कोई नहीं सुनता था आखिरकार एक दिन जब एक व्यक्ति ने उनकी कविता सुनी तो कवि ने उसका आभार मानते हुए कहा कि 'आप पहले ऐसे महानुभाव है जिन्होंने कि मेरी कविताएं इतने ध्यान से सुनी हैं.'

दूसरा व्यक्ति- 'जरा जोर से बोलिए मैं थोड़ा ऊंचा सुनता हूँ.'

□ □ □

एक कैदी से मिलने जेल में कोई नहीं आता था,यह देख कर जेलर को उस पर दया आ गई उसने कैदी को बुलाकर पूछा कि 'क्या बात है तुमसे मिलने तुम्हारा कोई रिश्तेदार जेल में क्यों नहीं आता है ?'

कैदी- 'क्योंकि साहब वे सब भी तो यहीं ही है !'

□ □ □

दो मित्र आपस में बातें कर रहे थे. एक बोला- 'क्या यह ताज्जुब की बात नहीं कि रमेश के भाग्य ने उसका आखिर तक साथ दिया.'

'वह कैसे ?'

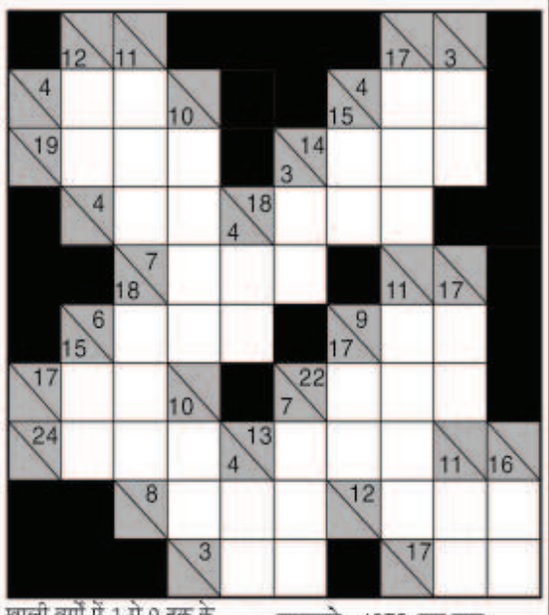

'खाना खाते हुए वह एक मोती निगल गया था.' मित्र ने पूरी बात बताते हुए कहा -'जब उसका ऑपरेशन करके वह मोती निकाला गया तो वह इतना कीमती निकला कि उसकी कीमत से न केवल आपरेशन का बिल ही चुक गया, बल्कि उसका क्रिया-कर्म भी ठाठ से सम्पन्न हुआ.'

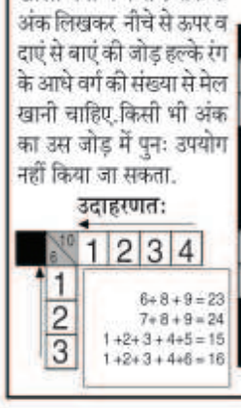

□ □ □

काकुरो पहेली - 4073

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

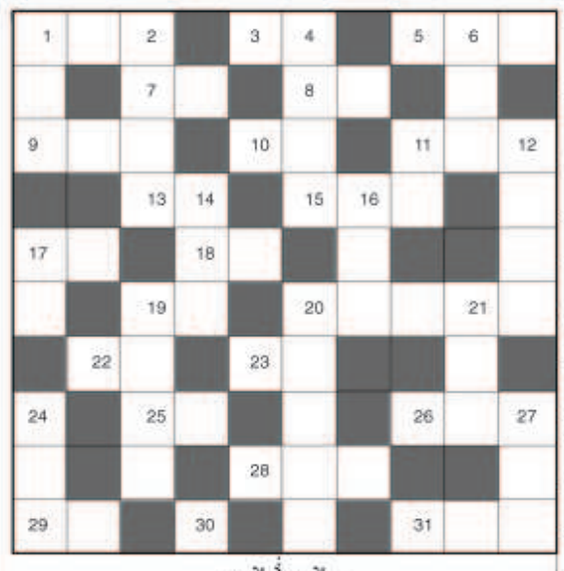

उदाहरणतः

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो -4072 का हल

फिल्म वर्ग पहेली -4073

बायें से दायें:-

१. जैकी श्रॉफ, माधुरी की 'सात सुरों के तार' गीत वाली फिल्म-३
३. 'चांदी की साइकल' गीत वाली गोविंदा, जूही चावला की फिल्म-२
५. अक्षय, करिश्मा की 'गोरी कँवारी सी हसीना का' गीत वाली फिल्म-३
७. नसीरुद्दीनशाह, जैकी, नगमा, शिल्पा की एक फिल्म-२
८. फिल्म 'जाल' की नायिका कौन थी-२
९. 'आयेगा आनेवाला' गीत वाली अशोककुमार, मधुबाला की फिल्म-३
१०. फिल्म 'हीरा पन्ना' में देव आनंद के किरदार का नाम क्या था-२
११. 'दिल क्यों धड़कता है' गीत वाली राहुलराय, पूजा भट्ट की फिल्म-३
१३. जैकी श्राफ, डिम्पल की 'क्या है तुम्हारा नाम' गीत वाली फिल्म-२
१५. दक्षिण की फिल्म 'थेवर मगन' किस भाषा में बनी थी ?-३
१७. 'वीरू' 'जय' और 'बसंती' आदि किस सुपर हिट फिल्म के पात्र हैं-२
१८. 'दिल है प्यारे जरा' गीत वाली फिल्म-२
१९. फिल्म 'अनकही' के गीत 'आँखों में अनजाने' का गायक कौन है-२
२०. 'आते आते तेरी याद' गीत वाली संजयदत्त, अनिता की फिल्म-२,१,२
२२. अमिताभ, जीनत की 'जिसका मुझे था इंतजार' गीत वाली फिल्म-२
२३. फिल्म 'सलाखें' में नायक कौन था-२
२५. 'क्यूं आँचल हमारा गिरा' गीत वाली अक्षयकुमार, रवीना की फिल्म-२
२६. गीत 'दिल के अरमां आँसुओं में' की गायिका कौन है-३
२८. 'काट दिये नाम सब' गीत वाली फिल्म-३
२९. फिल्म 'राँकी' की नायिका कौन थी-२
३०. जीतेंद्र, जयाप्रदा की 'आईने के सौ टुकड़ें' गीत वाली फिल्म-१
३१. 'सजना के सामने मैं तो गीत वाली फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. अजय देवगन, आयशा जुल्का, करिश्मा कपूर की 'बेशक तुम मेरी मुहब्बत हो' गीत वाली फिल्म-३
२. 'मेरी छतरी के नीचे आजा' गीत वाली धर्मेन्द्र, आदित्य, नसीरुद्दीन शाह, सोनू वालिया, पल्लवी, एकता की फिल्म-४
४. अशोक, प्रदीप, मीना कुमारी की 'दिल जो कह न सका' गीत वाली फिल्म-२,२
६. 'एक तो ये बैरी सावन' गीत वाली दिलीपकुमार, शर्मिला की फिल्म-३
११. विश्वजीत, माला की 'रोकना है अगर रोक लीजे मगर' गीत वाली फिल्म-२
१२. 'मुर्गी ने झूठ बोला' गीत वाली किशोरकुमार, साधना की फिल्म-४
१४. कंवलजीत, वहीदा की 'तुम अपना रंजोगम' गीत वाली फिल्म-३
१६. फिल्म 'गुरू' में नायक कौन था-३
१७. मनोजकुमार, नंदा, जया की 'पानी रे पानी तेरा रंग कैसा' गीत वाली फिल्म-२
१९. 'सावन बरसता है तुझसे मिलने को' गीत वाली मिथुन, मीनाक्षी की फिल्म-४
२०. जीतेंद्र, रीना राय की 'तेरे हाथों में पहनाके चूड़ियां' गीत वाली फिल्म-२,३
२१. आँखों के रस्ते दिल में' गीत वाली बॉबी देओल, रानी की फिल्म-३
२४. अमिताभ, हेमा मालिनी की 'हो जाता है प्यार' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'पानी पानी रे खारे पानी रे' गीत वाली चंद्रचूड़सिंह, अरशद वारसी, रवि गोसाई, तब्बू की फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली -4072

सूडोकु -4073

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

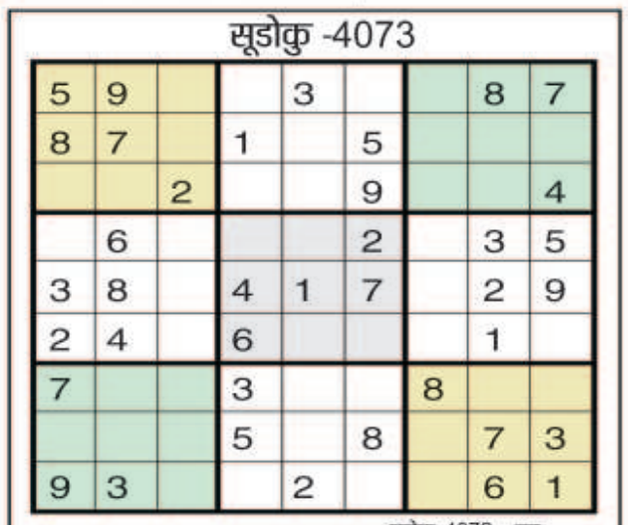

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु 4072 हल

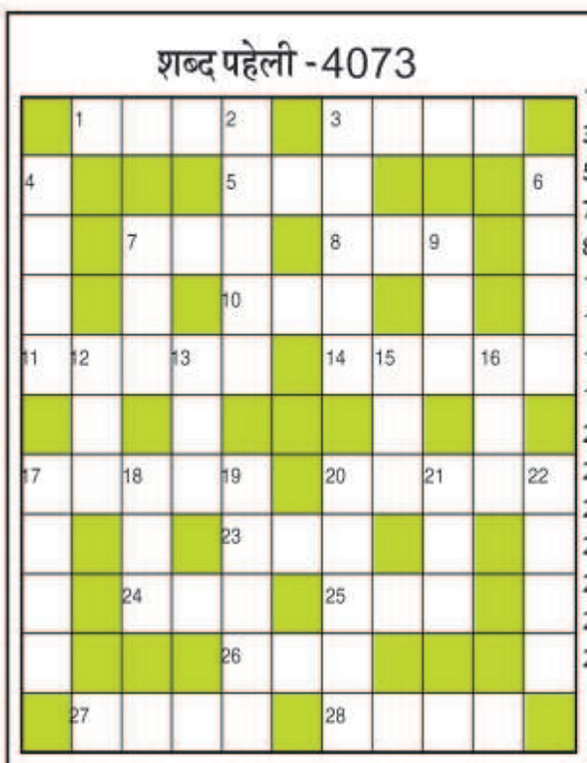

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7

शब्द पहेली -4073

बाएँ से दाएँ

1.छुट्टी,रजा-4
3.वध,आघात-4
5.दशानन-3
7.अनमोल,अनूठा-3
8.अनाथ,बेसहारा-3
10.खजूर-3
11.रहम करना-2,3
14.गहराई नापना-2,3
17.लगातार,सतत-5
20.संतुष्ट होना-2,3
23.बीच में,दौरान-3
24.खुश,आनंदित-3
25.शिक्षा-3
26.शोक-3
27.जांचना,परखना-4
28.धार्मिक विधि का आयोजन करने वाला-4

ऊपर से नीचे

2.मयखाना,मधुशाला-5
3.प्रेमकहानी-5
4.चापलूसी-4
6.नटना,वचन तोड़ना-4
7.फिजूल,व्यर्थ-3
9.अव्यवस्थित समूह,भीड़-3
12.गुजर करना-3
13.वेग,गति-3
15.खूबसूरत-3
16.पर्वतीय मैदान, समतल पर्वत-3
17.गुजारिश,मांग-4
18.सुअर-3
19.गुस्सा होना-5
20.ममतापूर्ण-5
22.अयोग्य, असंगत-4

शब्द पहेली 4072 का हल

असम ने सोशल रिफॉर्म में नया चैप्टर शुरू किया: BJP ने डिब्रूगढ़ प्रेस मीट में UCC का स्वागत किया

डिब्रूगढ़: (अर्णव शर्मा) ३ जून : असम लेजिस्लेटिव असेंबली में २७ मई को पास हुए यूनिफॉर्म सिविल कोड (णउउ)-२०२६ बिल को लेकर राज्य भर में बहस तेज होती जा रही है। इसी सिलसिले में, भारतीय जनता पार्टी (इगझ) डिब्रूगढ़ डिस्ट्रिक्ट कमेटी ने बुधवार को जिबोन फुकन नगर में अपने ऑफिस में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें इस कानून के मकसद, अहमियत और उम्मीद के मुताबिक सोशल असर पर रोशनी डाली गई।मीडिया से बात करते हुए, इगझ स्टेट जनरल सेक्रेटरी रितुपर्णा बरुआ ने णउउ बिल के पास होने को एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बताया, और कहा कि चीफ मिनिस्टर डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने नई सरकार के पहले असेंबली सेशन में इस कानून को पास करवाकर एक अहम चुनावी वादा पूरा किया है।बरुआ ने कहा कि यूनिफॉर्म सिविल कोड सिर्फ एक लीगल फ्रेमवर्क नहीं है, बल्कि सोशल रिफॉर्म का एक अहम तरीका है जिसका मकसद महिलाओं के हक, इज्जत और बराबरी की रक्षा करना है। उन्होंने कहा कि यूनिफॉर्म सिविल कोड का कॉन्सेप्ट लंबे समय से भारत की पॉलिटिकल और सोशल बातचीत का हिस्सा रहा है और इस बात पर जोर दिया कि असम ऐसा कानून लागू करने वाला देश का तीसरा राज्य बन गया है।विपक्ष की आलोचना करते हुए, बरुआ ने आरोप लगाया कि गौरव गोगोई के नेतृत्व में कांग्रेस कानून का विरोध करके समाज के कुछ हिस्सों में कन्फ्यूजन पैदा करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि नए कानून के तहत मुस्लिम महिलाओं को, खासकर, बेहतर कानूनी सुरक्षा का फायदा मिलेगा।एक से ज़्यादा शादी के मुद्दे पर बोलते हुए, बरुआ ने कहा कि इस प्रथा की मॉडर्न और प्रोग्रेसिव समाज में कोई जगह नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि एक से ज़्यादा शादी से अक्सर सामाजिक और साइकोलॉजिकल मुश्किलें आती हैं, खासकर महिलाओं और बच्चों के लिए, जिन्हें अक्सर भेदभाव और असमान व्यवहार का सामना करना पडता है। उन्होंने आगे कहा कि णउउ में एक से ज़्यादा शादी से जुडे मामलों को सुलझाने और सजा देने के प्रोविजन शामिल हैं।BJP नेता ने लिव-इन रिलेशनशिप को रेगुलेट करने के लिए सरकार के नजरिए के बारे में भी डिटेल में बताया। उनके अनुसार, असम का सोशल ताना-बाना पारिवारिक मूल्यों और शादी की संस्था में गहराई से जुडा हुआ है। बदलती सामाजिक हकीकतों को मानते हुए, उन्होंने ऐसे रिश्तों में महिलाओं को छोडे जाने, शोषण और धोखाधडी से बचाने के लिए कानूनी सुरक्षा उपायों की जरूरत पर जोर दिया।आमतौर पर 'लव जिहाद' कहे जाने वाले मुद्दे पर, बरुआ ने कहा कि कानून में ऐसे नियम हैं जिनका मकसद पहचान छिपाकर या धोखे से बनाए गए रिश्तों या शादियों को रोकना है। उन्होंने दावा किया कि इन उपायों से सामाजिक स्थिरता बढ़ेगी और महिलाओं की सुरक्षा मजबूत होगी।स्थानीय परंपराओं को बचाने के लिए सरकार के वादे को दोहराते हुए, बरुआ ने साफ किया कि णउउ के कई नियम आदिवासी समुदायों को उनके खास रीति-रिवाजों, सामाजिक प्रथाओं और सांस्कृतिक विरासत को देखते हुए छूट देते हैं। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाजों ने ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की इज़्ज़त और अधिकारों को बनाए रखा है, और सरकार उनकी खास पहचान और परंपराओं की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। बरुआ ने आगे बताया कि राज्य सरकार का लक्ष्य जरूरी नियम और रेगुलेटरी फ्रेमवर्क पूरा होने के बाद अगले छह महीनों के अंदर णउउ को पूरी तरह से लागू करना है। प्रेस कॉन्फ्रेंस खत्म करते हुए उन्होंने कहा कि इगझ ने हमेशा महिलाओं की सुरक्षा, समान अधिकार, सम्मान और सामाजिक न्याय की वकालत की है। उन्होंने कहा कि यूनिफॉर्म सिविल कोड एक बडा सुधार है जो आने वाले सालों में असम में ज़्यादा संगठित, सुरक्षित और बराबर सामाजिक व्यवस्था बनाने में मदद कर सकता है।

भुवनखाल की कुटिया से विधानसभा तक : संघर्ष, समर्पण और साधना की प्रेरक गाथा

धोलाई से भाजपा विधायक अमिय कांति दास के एक अज्ञात और साधारण से गाँव की कुटिया से निकलकर विधानसभा तक पहुँचने की यह कहानी किसी कल्पना-कथा से कम नहीं है। जिन लोगों का जन्म विशेष सुविधाओं और संसाधनों के बीच होता है, उनके लिए सफलता की ऐसी मंजिलें शायद सामान्य प्रतीत हों, लेकिन हमारे जैसे साधारण लोगों के लिए, जिनका जीवन रोजमर्रा के संघर्षों से घिरा रहता है, यह यात्रा किसी चमत्कार से कम नहीं लगती।

आज जब पीछे मुडकर बीते दिनों को देखता हूँ, तो आँखों के सामने संघर्ष, त्याग और तपस्या से भरे अनेक दृश्य उभर आते हैं। वह समय, जब 'अपेक्षा और उपेक्षा', 'स्नेह और अवहेलना', 'स्वागत और अस्वीकृति' के बीच तुम्हें और तुम्हारे साथियों को कठिन रास्तों पर निरंतर आगे बढ़ना पडा।मैंने अपनी आँखों से देखा है कि कैसे कुछ लोगों ने केवल तुम्हारे प्रति प्रेम और विश्वास के कारण, बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा के, हर परिस्थिति में तुम्हारा साथ दिया। उनके त्याग, धैर्य और समर्पण ने इस संघर्ष को शक्ति प्रदान की। तुम्हें सफलता के इस मुकाम तक पहुँचाने के लिए उन्होंने स्वयं अनेक बार हार स्वीकार की, तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान बनाए रखने के लिए अपने आँसू छिपाए, और तुम्हें तुम्हारा उचित सम्मान दिलाने के लिए न जाने कितने अपमान और उपेक्षाओं को मौन भाव से सहन किया।दूसरी ओर, तुमने भी अपने शुभचिंतकों को पीडा से बचाने के लिए असंख्य कष्टों और मानसिक यातनाओं को अपने भीतर समेटे रखा और हर परिस्थिति में चेहरे पर मुस्कान बनाए रखी। इस पूरे संघर्ष, समर्पण और साधना का मैं एक मौन साक्षी रहा हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह इतिहास समय के स्वर्णिम पृष्ठों पर सदैव अंकित रहेगा और आने वाली पीढ़ियों के संघर्षशील एवं जुझारू मनोबल को प्रेरणा देता रहेगा। आज इस अवसर पर मैं उन सभी देवतुल्य शुभचिंतकों, कार्यकर्ताओं और सहयोगियों को नमन करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम, निष्ठा और समर्पण ने इस साधना को सफल बनाया।ईश्वर ने हम सभी की प्रार्थनाएँ सुनी हैं। उन्होंने अपनी असीम कृपा बरसाई है। दिव्य त्रयी का आशीर्वाद सदैव आपके साथ है। भय का कोई कारण नहीं, क्योंकि ईश्वर ने आपको एक विशेष उद्देश्य के लिए चुना है।

अब समय है कि पूर्ण उत्साह, निष्ठा और समर्पण के साथ 'राष्ट्र सर्वोपरि' के महान मंत्र को हृदय में धारण कर आगे बढा जाए। ङ्गतन समर्पण, मन समर्पण, धन समर्पणङ्ग की भावना से प्रेरित होकर समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा में स्वयं को समर्पित किया जाए।संघ के शताब्दी वर्ष में एक स्वयंसेवक की ओर से यही अपेक्षा, यही प्रार्थना और यही शुभकामना है कि यह यात्रा निरंतर जनसेवा, राष्ट्रनिर्माण और मूल्यों की प्रतिष्ठा के पथ पर आगे बढती रहे।

श्रीमती मुक्ता चक्रवर्ती, शिलचर (असम)

बशिष्ठ पुलिस का ड्रग्स विरोधी अभियान: १५ हिरासत में

गुवाहाटी, ०३ जून (हि.स.)। गुवाहाटी में मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बशिष्ठ पुलिस ने बडी कार्रवाई करते हुए चार कुख्यात ड्रग्स तस्करों को गिरफ्तार किया तथा ११ नशे के आदी युवकों को हिरासत में लिया है। अभियान के दौरान पुलिस ने १११ ग्राम हेरोइन और १०० खाली कंटेनर भी बरामद किए हैं।पुलिस द्वारा मंगलवार को दी गई जानकारी के अनुसार, गुप्त सूचना के आधार पर चलाए गए इस अभियान में मादक पदार्थों की खरीद-बिक्री और सेवन में संलिप्त लोगों के खिलाफ कार्रवाई की गई। गिरफ्तार तस्करों से पूछताछ के आधार पर ड्रग्स नेटवर्क से जुडे अन्य लोगों की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है।पुलिस अधिकारियों ने चिंता जताते हुए कहा कि गुवाहाटी में रोजगार और शिक्षा प्राप्त करने के लिए आने वाले कई प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारों के युवक भी नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं। इससे समाज और युवाओं के भविष्य पर गंभीर प्रभाव पड रहा है।बरामद हेरोइन और अन्य सामान को जब्त कर लिया गया है। मामले में आगे की जांच जारी है तथा पुलिस ने शहर में मादक पदार्थों के कारोबार के खिलाफ अभियान और तेज करने की बात कही है।

एसएसबी ने सीमावर्ती गांव में आयोजित किया निःशुल्क पशु चिकित्सा शिविर

कोकराझार, २ मई। भारत-भूटान सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की छठी वाहिनी, रानीगुली द्वारा जन-कल्याणकारी गतिविधियों के तहत एक निःशुल्क पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर सीमावर्ती गांव आईपॉली-१ में आयोजित हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य दूर-दराज के क्षेत्रों में पशुपालकों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना था।शिविर का नेतृत्व क्षेत्रक मुख्यालय बोंगाईगांव के पशु चिकित्सा अधिकारी, सहायक कमांडेंट डॉ. यतींद्र सिंह सेंगर ने किया। इस दौरान सीमा चौकी आईपॉली के अंतर्गत आने वाले विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में पशुपालक अपने मवेशियों को लेकर पहुंचे। शिविर में कुल ८३ मवेशियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और उन्हें आवश्यक दवाइयां निःशुल्क वितरित की गई।इस अवसर पर उपस्थित एसएसबी अधिकारियों ने कहा कि बल न केवल देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि सीमावर्ती क्षेत्रों के निवासियों के जीवन स्तर को सुधारने और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए भी सदैव तत्पर है। उन्होंने बताया कि ऐसे शिविरों के आयोजन का मुख्य लक्ष्य ग्रामीणों को पशु संरक्षण के महत्व को समझाना और सीमा क्षेत्र में जन-सेवा की भावना को सुदृढ करना है।एसएसबी द्वारा किए गए इस मानवीय प्रयास की स्थानीय ग्रामीणों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पशुपालकों ने कहा कि दुर्गम सीमावर्ती क्षेत्र में इस तरह की चिकित्सा सुविधा मिलने से उनके पशुधन की सुरक्षा में बहुत मदद मिली है। इस पहल ने ग्रामीणों और सुरक्षा बल के बीच विश्वास के बंधन को और अधिक मजबूत किया है।

चंडीचरण रोड स्थित लोकनाथ धाम में भक्ति के साथ मनाई गई लोकनाथ ब्रह्मचारी की १३६वीं तिरोधान तिथि

रानू दत्त शिलचर, ३ जून। विश्वभर के श्रद्धालुओं और आध्यात्मिक अनुयायियों की श्रद्धा-भक्ति के बीच बुधवार को शिलचर के चंडीचरण रोड स्थित लोकनाथ धाम में महान संत बाबा लोकनाथ ब्रह्मचारी की १३६वीं तिरोधान तिथि धार्मिक रीति-रिवाजों और वैदिक अनुष्ठानों के साथ श्रद्धापूर्वक मनाई गई।मंदिर के पुजारियों एवं प्रबंधन समिति के सदस्यों ने बताया कि लोकनाथ धाम में पिछले १८ वर्षों से निरंतर बाबा लोकनाथ ब्रह्मचारी की तिरोधान तिथि का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सुबह से ही मंदिर परिसर में विशेष पूजा-अर्चना, वैदिक मंत्रोच्चार, आरती, पुष्पांजलि तथा विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया।बडी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने दीप प्रज्ज्वलित कर बाबा लोकनाथ को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके बताए आदर्शों और आध्यात्मिक संदेशों का स्मरण किया। दिनभर भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण से लोकनाथ धाम गुंजायमान रहा। दोपहर में मंदिर प्रबंधन की ओर से महाप्रसाद वितरण का आयोजन किया गया, जिसमें सैकडों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान भक्तों ने बाबा लोकनाथ ब्रह्मचारी के त्याग, तपस्या और मानव कल्याण के लिए दिए गए उनके संदेशों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन-दर्शन को आत्मसात करने का संकल्प लिया।लोकनाथ धाम के पुजारी ने कहा कि बाबा लोकनाथ ब्रह्मचारी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाना और उनके आदर्शों को जीवित रखना ही तिरोधान तिथि आयोजन का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक वर्ष इस अवसर पर बडी संख्या में श्रद्धालु धाम पहुंचकर पूजा-अर्चना में भाग लेते हैं और आध्यात्मिक शांति एवं आत्मिक ऊर्जा प्राप्त करते हैं।समारोह का समापन सामूहिक प्रार्थना एवं विश्व शांति की कामना के साथ किया गया।

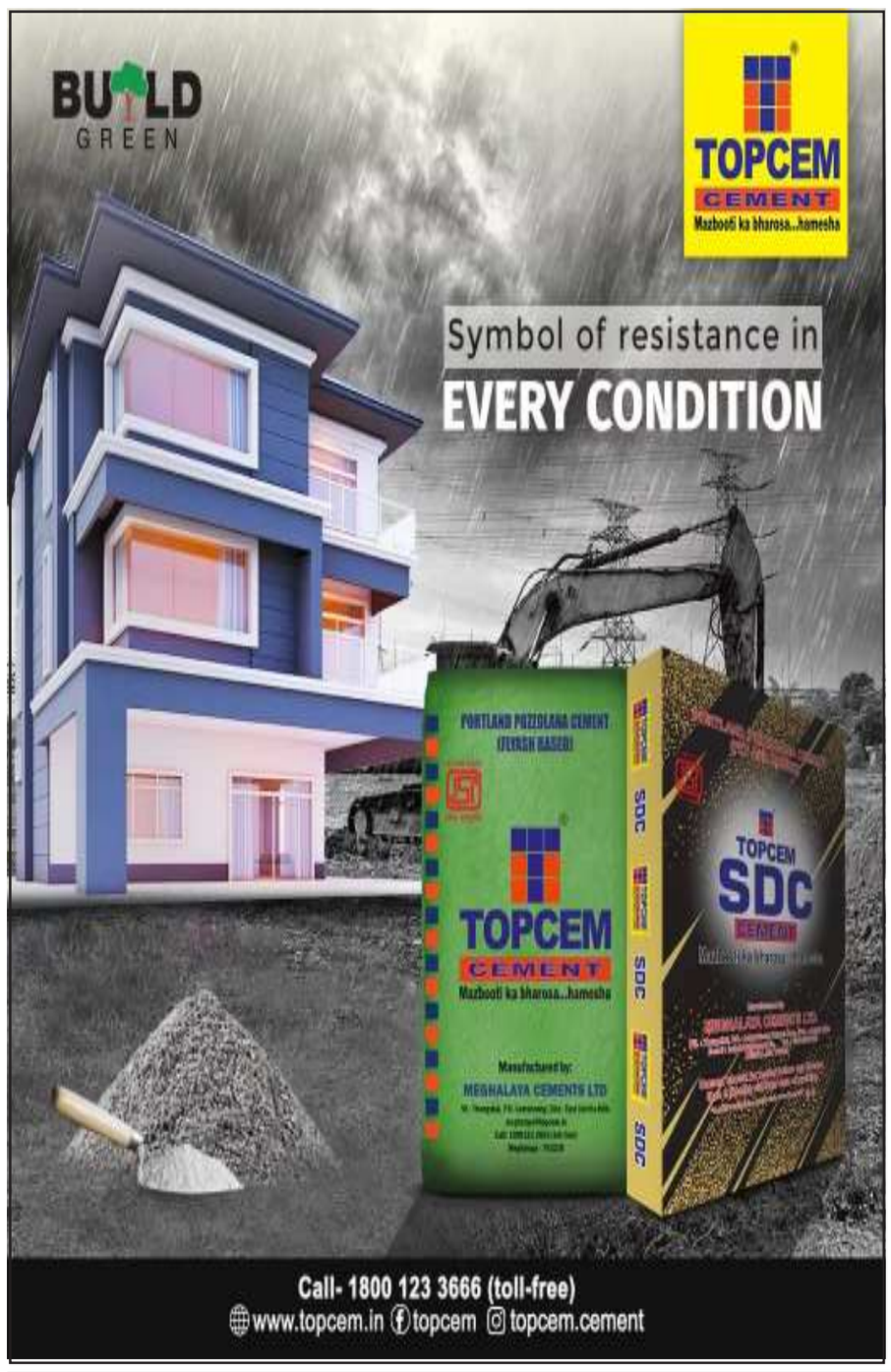

भारत की रोटी पर मंडराने लगा जलवायु संकट, गेहूं उत्पादन पर बढ़ती गर्मी का खतरा गहराया

नई दिल्ली (एजें) ३ जून :. भारत की खाद्य सुरक्षा की रीढ मानी जाने वाली गेहूं की फसल अब जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों का सामना कर रही है. उश्रळारींश ढीशपवी की नई रिपोर्ट ङ्गथहशरीं णपवशी डीर्शीीः उश्रळारींश उहरपसश, ठळीळपस क्शरीं, रपव अवरींरींळेप झरींहुरी ळप खपवळर्ऽी चरक्षी थहशरीं-त्रीुळपस डींरीशीङ्ग ने चेतावनी दी है कि देश के प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में बढता तापमान, छोटी होती सर्दियां और बदलते मौसम के पैटर्न गेहूं उत्पादन के लिए बडा खतरा बनते जा रहे हैं. रिपोर्ट के अनुसार यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले वर्षों में देश की खाद्य सुरक्षा पर व्यापक असर पड सकता है.भारत वर्तमान में दुनिया का दूसरा सबसे बडा गेहूं उत्पादक देश है. देश में हर वर्ष लगभग १०७ मिलियन टन गेहूं का उत्पादन होता है, जो वैश्विक उत्पादन का करीब १४ प्रतिशत है. लेकिन जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अब केवल वैज्ञानिकों की चेतावनी तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि खेतों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने लगा है. रिपोर्ट में कहा गया है कि पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में सर्दियों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है.अध्ययन के अनुसार सबसे चिंताजनक स्थिति रात के तापमान में हो रही वृद्धि को लेकर है. उश्रळ-ारींश ढीशपवी की रिसर्च लीड और रिपोर्ट की मुख्य लेखिका डॉ. पलक बल्यान के अनुसार भारत के गेहूं उत्पादन के लिए सबसे कम चर्चा किया गया लेकिन सबसे गंभीर खतरा रातों का लगातार गर्म होना है. रिपोर्ट बताती है कि लगभग सभी प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में न्यूनतम तापमान यानी रात का तापमान दिन के तापमान की तुलना में अधिक तेजी से बढ रहा है.

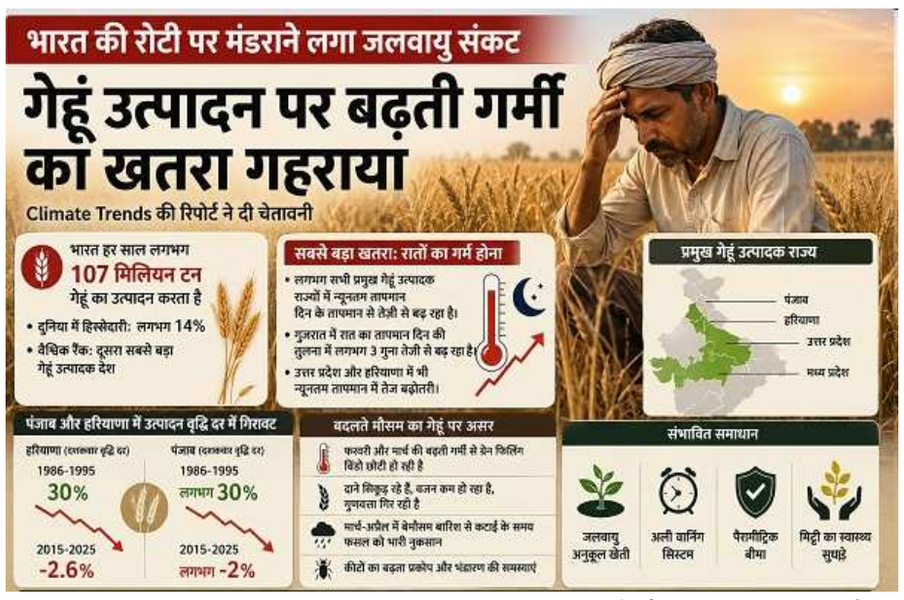

विशेष रूप से गुजरात में रात का तापमान दिन की तुलना में लगभग तीन गुना तेजी से बढ़ने का उल्लेख किया गया है. उत्तर प्रदेश और हरियाणा में भी इसी प्रकार का रुझान सामने आया है. वैज्ञानिकों के अनुसार रात में अधिक तापमान होने पर गेहूं के पौधे अधिक ऊर्जा खर्च करते हैं. इससे दानों के विकास के लिए आवश्यक काबीहाइड्रेट पहले ही समाप्त होने लगते हैं और परिणामस्वरूप दाने छोटे, हल्के तथा कम गुणवत्ता वाले बनते हैं.रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि फरवरी और मार्च के दौरान अचानक बढ़ने वाला तापमान गेहूं की ङ्गग्रेन फिलिंग विंडोङ्ग को छोटा कर रहा है. यही वह महत्वपूर्ण समय होता है जब गेहूं का दाना पूरी तरह विकसित होता है. तापमान बढ़ने के कारण फसल समय से पहले पकने लगती है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है. इसका सीधा असर किसानों की आय और देश के कुल उत्पादन पर पड रहा है.उत्तर भारत के गेहूं उत्पादन क्षेत्र से प्राप्त आंकडे भी चिंता बढाने वाले हैं. रिपोर्ट के अनुसार पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में पिछले तीन दशकों के दौरान उत्पादन वृद्धि दर में लगातार गिरावट दर्ज की गई है. हरियाणा में वर्ष १९८६ से १९९५ के बीच गेहूं उत्पादन की दशकवार वृद्धि दर लगभग ३० प्रतिशत थी, जो २०१५ से २०२५ के दौरान घटकर माइनस २.६ प्रतिशत तक पहुंच गई. पंजाब में भी लगभग इसी तरह की स्थिति सामने आई है. विशेषज्ञों का कहना है कि इसका अर्थ यह है कि खेती की तकनीक और क्षेत्रफल में बडे बदलाव नहीं हुए, लेकिन मौसम का स्वरूप बदल जाने से उत्पादन प्रभावित हो रहा है.

रिपोर्ट के अनुसार फरवरी अब सबसे तेजी से गर्म होने वाला महीना बन गया है. वर्ष २०१० से २०२५ के बीच फरवरी के तापमान में प्रति दशक लगभग ०.६९ डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की गई है. मार्च और अप्रैल में भी उल्लेखनीय तापमान वृद्धि देखी गई है. इन महीनों में बढती गर्मी फसल के फूल आने और दाना बनने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रही है. इसके कारण कम अंकुरण, कम फुटाव, जल्दी पकने वाली फसल और कीटों के बढते प्रकोप जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं.विशेषज्ञों का कहना है कि संकट केवल तापमान तक सीमित नहीं है. वर्षा का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है. रिपोर्ट में बताया गया है कि पश्चिमी विक्षोभ अब पहले की तुलना में देर से सक्रिय हो रहे हैं और मार्च-अप्रैल में अधिक वर्षा ला रहे हैं. यह वही समय होता है जब कई राज्यों में गेहूं पक चुका होता है या कटाई चल रही होती है. ऐसे में बेमौसम बारिश किसानों को भारी नुकसान पहुंचा सकती है.गुजरात के किसान राम सिंह ने रिपोर्ट में बताया है कि पहले गेहूं लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता था, लेकिन अब कुछ महीनों में ही भंडारण संबंधी समस्याएं सामने आने लगी हैं. उनके अनुसार अक्टूबर में अधिक गर्मी के कारण बीजों का अंकुरण प्रभावित होता है, जबकि फरवरी और मार्च की अचानक गर्मी दानों को पूरी तरह विकसित होने का अवसर नहीं देती. यदि कटाई के समय बारिश हो जाए तो पूरी फसल बर्बाद होने का खतरा बढ जाता है.

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. सुरेंद्र कुमार ढाका के अनुसार सर्दियां अब पहले की तुलना में छोटी और अधिक गर्म हो गई हैं, जिससे गेहूं की प्राकृतिक वृद्धि प्रक्रिया प्रभावित हो रही है. उन्होंने चेतावनी दी कि बढती नमी और बेमौसम बारिश के कारण फसलों में फंगल संक्रमण और गुणवत्ता संबंधी समस्याएं बढ रही हैं.रिपोर्ट में समाधान के तौर पर जलवायु अनुकूल खेती को बढावा देने की आवश्यकता बताई गई है. विशेषज्ञों का मानना है कि मल्चिंग, फसल अवशेष प्रबंधन, देशी बीजों का उपयोग, मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा बढाना और जल संरक्षण जैसी तकनीकें किसानों को बदलते मौसम के प्रभावों से बचाने में मदद कर सकती हैं. साथ ही क्लाइमेट-स्मार्ट एग्रीकल्चर, अर्ली वार्निंग सिस्टम और पैरामीट्रिक बीमा योजनाओं को भी तेजी से लागू करने की जरूरत बताई गई है.

यह रिपोर्ट ऐसे समय में सामने आई है जब भारतीय मौसम विभाग ने वर्ष २०२६ के मानसून अनुमान को दीर्घकालीन औसत के ९० प्रतिशत तक सीमित रहने का अनुमान जताया है. साथ ही वैश्विक मौसम एजेंसियां भी एक मजबूत एल नीनो की संभावना व्यक्त कर रही हैं. ऐसे में विशेषज्ञों का मानना है कि भारत के लिए गेहूं उत्पादन को सुरक्षित रखना केवल कृषि का विषय नहीं, बल्कि खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता से जुडा राष्ट्रीय मुद्दा बन चुका है.रिपोर्ट का निष्कर्ष स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की चेतावनी नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता है. खेतों में बदलता मौसम केवल किसानों की समस्या नहीं रह गया है, बल्कि यह धीरे-धीरे देश की हर रसोई और हर नागरिक के जीवन को प्रभावित करने वाला विषय बनता जा रहा है.

मुद्रक, प्रकाशक व स्वामी श्री दिलीप कुमार द्वारा भारती ऑफसेट मुद्रणालय, कटहल रोड, शिलचर-05 (असम) से मुद्रित व प्रकाशित, सम्पादक-श्रीमती सीमा कुमार, Ph & Fax (03842) 242633, (M) 9435213512